मानव मन्दिर

मई-जून 2018 (वर्ष-45 अंक 05-06)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

प्रबन्धक सम्पादक
श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा
प्रकाशक
श्री राणा रणबीर सिंह
(जनरल सैक्रेटरी)

अनुक्रमणिका

1. प्रार्थना - 02
2. महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज :
   बर्तन खाली (रिक्त) नहीं रह सकता-5
3. हजूर परमदयाल जी महाराज:
   परमार्थ व स्वार्थ प्रदान करने वाली शिक्षा-14
   कर्म-विचार- 27
4. हजूर मानव दयाल जी महाराज : विश्वास से भक्ति - 51
5. हजूर दयाल कमल जी महाराज : सत्संग- 64
6. दानी सज्जनों की सूची - 81

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है। शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
email: manavmandir68@gmail.com
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

प्रार्थना

ऐ मालिके कुल, सर्वव्यापी, सर्वाधार
मानव जाति को सद्‌बुद्धि दे कि
वह 'मानवता' के मार्ग पर
चल कर जीवन में सुख
शान्ति प्राप्त करें।

राधास्वामी! राधास्वामी! राधास्वामी!

इस बार 55वाँ वैसाखी महोत्सव अति उत्साह और श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इसके लिए मैं दयालकमल जी महाराज, आचार्य कुलदीप शर्मा जी, आचार्य अरविन्द पाराशर तथा बाकि समस्त आचार्यगणों, ट्रस्ट प्रधान श्री ब्रह्मशंकर जिम्पा जी, अपने सहयोगी ट्रस्टीगणों तथा समस्त सत्संगी भाई-बहनों का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ। जिनके आशीर्वाद तथा सराहनीय सहयोग से यह कार्यक्रम सम्पन्न हो सका।

सत्संगी भाई-बहनों में उत्साह देखते ही बनता था। उन्होंने ट्रस्ट द्वारा की गई हर तरह की व्यवस्था की सराहना की। मैं यहाँ अपने स्कूल-स्टाफ, लाईब्रेरी प्रभारी, मन्दिर कार्यालय स्टाफ, डॉ. के. एन. आहुजा (एलोपैथिक) तथा डॉ. मनमोहन सिंह (होम्योपैथिक) उनके सहायक श्री अमरधीर का धन्यवाद करता हूँ।

स्कूल-स्टाफ ने बच्चों की सहायता से जोड़ों की सेवा, लंगर-सेवा में अपना पूर्ण योगदान दिया। उत्सव के दौरान स्वच्छता व सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया। हमारे लिए यह हर्ष की बात है कि इन चार-पाँच दिनों में आयोजित कार्यक्रम के सम्बन्ध में, किसी भी तरह के प्रबन्ध व व्यवस्था के बारे में सत्संगी भाई-बहनों ने कोई भी शिकायत नहीं की। यब सब केवल व केवल परमदयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज की असीम कृपा, दयाल कमल जी महाराज व आचार्यगणों के आशीर्वाद तथा हमारे आदरणीय ट्रस्ट प्रधान

ब्रह्मशंकर जिम्पा जी तथा समस्त ट्रस्टीगणों तथा आए सत्संगी भाई-बहनों के सहयोग से ही सम्भव हो सका। यहाँ पर मैं श्री विजय डोगरा, श्री लाजपत राय, श्री विद्यासागर, धीरज कुमार, अभिजीत सिंह द्वारा लंगर-सेवा में अनुकरणीय योगदान के लिए धन्यवाद करता हूँ।

बाबा जी के प्रेमी सत्संगी श्रीमति वन्दना व श्री राहुल भटनागर तथा श्रीमति व श्री सुधीर भटनागर (यू.एस.ए.) द्वारा (Financed) सौर ऊर्जा प्लान्ट 14 अप्रैल 2018 से संतोषजनक चल रहा है। इसके लिए हम भटनागर परिवार के प्रति आभारी हैं।

दयालकमल जी महाराज 18 अप्रैल, 2018 से एक महीने के लिए अमेरिका सत्संग दौरे पर गए हुए हैं। अगला गुरूपूर्णिमा उत्सव 27 जुलाई, 2018 को मनाया जा रहा है जिसके लिए आप सभी आदर आमंत्रित हैं। वैसाखी उत्सव के दौरान यदि हमसे जाने-अनजाने में कोई त्रुटि व गलती हो गई हो तो मैं क्षमायाचना करता हूँ। आपका दास-

राणा रणवीर सिंह

सचिव

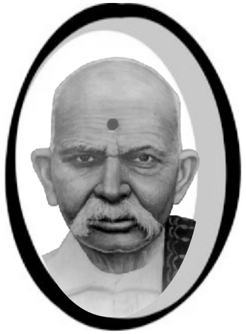

बर्तन खाली (रिक्त) नहीं रह सकता

महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

बर्तन को कोई व्यक्ति खाली नहीं रखता। उसमें कुछ-न-कुछ भरना ही होता है। प्रकृति में खाली या रिक्त रहने का कोई चिन्ह तक नहीं है। जब तुम तालाब से घड़ा या लोटा भर लेते हो तब आस-पास का पानी खाली जगह भरने के लिए उस समय हिलकोरें मारने लगता है और उसी क्षण वह स्थान भर जाता है। यही दशा उस मन रूपी बर्तन की भी होती है।

तुमने किसी व्यक्ति को बुरा ख्याल दिया, बहकाया, कुमार्गी किया या उसको भ्रम में डालकर उसको हानि पहुंचाई। इधर ख्याल तुम्हारे हृदय से निकल कर दूसरे के हृदय में गये। उधर उसके या और किसी के उसी प्रकार के ख्याल तुम्हारे अन्दर भर गए और तुम अधिक बुरे बन गए। यह न समझो कि किसी को बुरा ख्याल देकर तुम अच्छे रह सकते हो। यह असम्भव है।

किसी की बुराई सोचना उस पर अपने बुरे ख्याल से आक्रमण करना है। यह विश्वास कभी न करो कि उसे या उसके मन को तुम्हारे विश्वास का ज्ञान नहीं है ज्ञान कई तरह का होता है। चाकू से किसी को घायल कर दो तुम देखते हो चाकू में खून लग जाता है। इस तरह जिसके बुरे ख्याल दूसरे के पास बदनीयत से भेजे जाते हैं उसी बुराई

को भी अनजाने हुए अपने साथ लाते हैं और बुरे से अधिक बुरा और अत्यन्त बुरा बना देते हैं और हृदय बुराई से बिल्कुल भर जाता है।

बुराई का क्रम

इस अनेकता के जगत में हर ख्याल और हर वस्तु अपनी जाति को बढ़ाती रहती है। भलाई करो, भलाई बढ़ेगी। बुराई करो बुराई बढ़ेगी। ख्यालात की भी सन्तान होती है। जिस तरह तुम बाल-बच्चे पैदा करके उनसे घिर जाते हो वैसे ही बुरे ख्याल सोचने से अपने हृदय में बुराई की सन्तान को इतना बढ़ा लेते हो कि वह तुम्हारा विशेष स्वभाव बन जाता है और तुम स्वयं इसमें लिपट-लिपटकर गुत्थम-गुत्था की दशा में आ जाते हो। रेशम का कीड़ा अपने ही अन्दर से धागे निकाल-निकालकर कुकरी बना लेता है और उसी के अन्दर फँस-फँसा कर बन्द हो जाता है। इस तरह बुराई का चिन्तन करने वाला आदमी भी अपनी बुराई से मारा जाता है।

तुम यह कभी न समझो कि तुम भलाई अथवा बुराई दूसरों के लिए करते हो। किन्तु अधिकतर अपने ही लिये करते हो और उसका प्रभाव तुम पर ही पड़ता है। यह कारण है कि सन्त कहते हैं कि तुम अपने ऊपर दया करके केवल भलाई किया करो। इसमें अधिकतर तुम्हारी ही भलाई है। दूसरों की बुराई भलाई तो देर में होगी। मगर तुम तो उसी समय भले और बुरे बने जाओगे। इसलिए मन वचन और कर्म से सावधान रहो कि तुमसे बुराई के क्रम की उत्पत्ति न होने पावे।

बुराई एक मल है

जो व्यक्ति किसी और के साथ बुराई करता है वह गुप्त रीति से उसकी बुराई को छीन-छीन कर अपने अन्दर भरता जाता है। बुराई

मल है। मल सर्वदा मल ही उत्पन्न करता है। स्त्री पुरुष से बीज लेकर उसी जैसे और उसी के भावनाओं जैसे रूप अपने शरीर से निकालती है और मल-मूत्र की आकृति गढ़ कर बना देती है। इसी तरह तुम किसी आदमी का बुरा सोचते हो तो तुम उसकी बुराई को छीन लेते हो और उसकी बुराई के भण्डार बनकर तरह-तरह की बुराइयाँ करने लगते हो। उत्पत्ति का क्रम प्रकृति में एक ही ढंग पर नहीं चलता। इसके अनन्त ढंग है। कहीं मैथुन या भोग से उत्पत्ति होती है, कहीं ख्याल लेकर उत्पत्ति होती है और कहीं मादा नर का मल खाकर उत्पत्ति करती है आदि-आदि ?

मैथुन से उत्पत्ति का सिद्धान्त तुम जानते हो। मल खाकर उत्पत्ति के नियम से थोड़े से लोग परिचित है। मोरनी मोर के साथ जोड़ा नहीं खाती। कम से कम यह बात प्रसिद्ध है कि जब मोरनी में मस्ती आती है तो नर की आँख की कीचड़ या मैल को ठोंठ से लेकर निगल जाती है। तब उसी से अपने पेट से अण्डा निकालती है और मोरों की उत्पत्ति का क्रम चलता रहता है। ख्याल से भी ख्याल उत्पत्ति होती है। तुमने किसी से अच्छी बात सुनी उसको मन में रख लिया। अब उसी से अच्छे ख्याल की सन्तान चलने लगी। तुमने किसी की कविता को याद कर लिया वह तुम्हारे अन्दर जाकर कविता की औलाद उत्पन्न करने लगती है। यह तुम किसी हद तक जान सकते हो। ठीक इसी तरह से बुरे आदमी पीठ पीछे दूसरों की निन्दा करते, दूसरों को हानि पहुँचाने और उनकी बुराई करते रहने से उन दूसरे आदमियों की बुराई के मल को खाते हैं और तरह-तरह की बुराई के पैदा करने वाले होते हैं। दूसरों की बुराई देखने वाला, दूसरों की बुराई बखानने वाला

और दूसरों की बुराई सोचने वाला मल खाने वाला है और सूअर की तरह औरों के मल को खा खाकर अपने आपको मलीन और घृणा के पात्र बनाते जाते है। आप दु:खी होते हैं और दु:ख को, औलाद को दुनिया में पैदा कर जाते हैं।

क्या यह बात अच्छी है ? कभी नहीं।

दूसरों की बुराई करने वालों, दूसरों की बुराई बखानने वालों और सोचने वालों को ईश्वर आराधना का अधिकार नहीं है, क्योंकि ईश्वर उपकार है, ईश्वर प्रेम है और ईश्वर पुण्य है। जो जैसा बनेगा उसको वैसी ही वस्तु प्राप्त होगी।

राधास्वामी मत में कर्म की जो परिभाषा की गई है वह विलक्षण है। यह कहता है-''जो कर्म सत् पुरुष राधास्वामी के चरणों की निकटता प्राप्त कराते है वह भले और अच्छे हैं और जिन कर्मों के करने से सत्पुरुषों के कदमों से दूर होती जाये वह बुरे हैं''

कुकर्मी ईश्वर से दूर और आसुरी भावों के निकट होता जाता है। उपकारी ईश्वर के निकट और आसुरी भावों से दूर होता जाता है। यह संक्षेप में कर्मों की व्याख्या है।

इन सब बातों को दृष्टि में रखकर उपदेश किया गया है कि हिंसा ही महा पाप है और अहिंसा ही परम धर्म है। इसी असूल या सिद्धान्त पर समस्त आध्यात्मिक पन्थों की इमारत की चाहे वह कोई क्यों न हो,नींव डाली गई है। हिंसा करने वाला जीवित प्राणियों को खाने वाला है। हिंसा करने वाला मृतक शरीरों को खाने वाला है। इनसे सावधान रहो कि तुम हिंसा की बातों को न सीखो।

अब हम इन पाँच सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त को समझा

चुके। अब शेष चारों की व्याख्या करेंगे।

पवित्रता और अपवित्रता

अपवित्रता में दु:ख है और पवित्रता में सुख है। अपवित्रता घृणा की वस्तु है। पवित्रता प्रेम करने की वस्तु है।

तुम जिस समय मैले कपड़े उतार कर स्वच्छ और सफेद कपड़े पहनते हो, कैसी प्रसन्नता मिलती है। तुम जिस समय अपने पेट के गन्दे मल को निकाल कर, सात्विक भोजन खाते हो कैसा सुख मिलता है ? तुम जिस समय अपने शरीर को धोते हुए नहा लेते हो और मैल उतर जाता है कैसी प्रफुल्लता और प्रसन्नता आ जाती है। यह प्रतिदिन की घटनायें हैं जिनके हृदयांगम कराने के लिये हमको किसी दर्शनशास्त्र से सहायता लेने की आवश्यकता नहीं है। अपवित्रता में स्थूलता है और पवित्रता में सूक्ष्मता है। अपवित्र को देखकर प्रत्येक व्यक्ति उससे बचना चाहता है। पवित्र को देखकर हर एक उसको संगत की अभिलाषा करता है।

शरीर से पवित्र बनो। वाणी के पवित्र बनो। मन के पवित्र बनो। शारीरिक, मानसिक और वाणी की अपवित्रता से बचो ताकि प्रफुल्लता और हर्ष प्राप्त हो और अप्रसन्नता और घृणा से बचे रहो।

बाहरी और आन्तरिक पवित्रता दोनों ही को आवश्यकता है। बाह्य पवित्रता ही अन्तरीय पवित्रता का प्रारम्भिक अंग है। नहाओ धोओ। अपनी शारीरिक शक्ति को सुखप्रद बनाओ। उस समय शरीर के सूक्ष्म और हलके होने से तुम अन्तरीय पवित्रता के विषय को सोच सकोगे और उत्तराधिकारी हो सकोगे। इसके बिना होना कठिन है। जब तक शरीर पवित्र न होगा मन में पवित्रता न आयेगी और जब तक मन

पवित्र न होगा, रूह (आत्मा) की पवित्रता प्राप्त करना कठिन होगी।

शरीर की पवित्रता यह है कि स्नान करो। साफ-सुथरे कपड़े पहनो। जिभ्या की पवित्रता यह है कि दुर्वचन कहने से बचते हुए मीठे वचन बोलो। केवल ऐसे शब्द मुँह से निकालो जो सबको प्यारे लगें। जिस सच्चाई से किसी के हृदय को चोट पहुंचती हो उससे भी बचकर रहो। हाथ की पवित्रता यह है कि उससे बुरे काम न हों, किन्तु अच्छे काम होते रहें और मन की पवित्रता यह है कि गन्दे ख्यालात पास न फटकने पाये। केवल अच्छे ही ख्यालात से सम्बन्ध रहे। इन तीन मन, वाणी और शरीर के पवित्र कर्मों से तुम्हारा रूझान अध्यात्म की ओर होगा।

हक व हलाल अर्थात सच्चाई की कमाई

ईश्वर की भक्ति केवल ऐसा आदमी कर सकता है जो ईमानदारी से जीविका पैदा करता है। बेईमानी से जीविका उपार्जन करने वाले से कभी भक्ति नहीं बन सकेगी।

तुमको हाथ पाँव इसलिए मिले हैं कि उनसे अच्छे काम करो। बुद्धिमत्ता का अर्थ यही है कि सोच समझकर ईमानदारी के ढंग से रोटी प्राप्त करो। प्रकृति की देंने अर्थात् बुद्धि और हाथ पाँव को पाकर तुम व्यर्थ दूसरों के धन दौलत पर कुदृष्टि क्यों डालते हो। जो व्यक्ति दूसरों का धन खाता है उसको दूसरे के आधीन और कृतज्ञ होना पड़ता है। पराधीनता इस दुनिया में सबसे बुरी आपदा है और कृतज्ञता या और किसी का एहसान उठाना वह प्राणघातक शत्रु है कि मनुष्य के आत्मसम्मान को मलियामेंट कर देता है। उसके सदाचार की अवस्था बिगड़ जाती है। हृदय व्यर्थ कृतज्ञ होकर स्वतन्त्र नहीं रहता और

अनावश्यक रूप से गुलाम हो जाता है। चापलूसी करने का स्वभाव हो जाता है। निकम्मा हो जाता है। हाथ पाँव और हृदय और मस्तिष्क में जंग लग जाती है। ताले की ताली जो सदा चलती रहती है चमकती हुई साफ और सुथरी रहती है। जो यूं ही पड़ी रहती है, वह मोर्चा या जंग लगकर कमजोर और बेकार बन जाती है यह तुम जानते हो।

इसके अतिरिक्त तुम जिसकी रोटियां तोड़ोगे उन रोटियों का प्रभाव अन्दर आयेगा। मालूम नहीं कि किसी व्यक्ति ने किस तरह धन की कमाई की है। धन के पुजारी अनुचित ढंग से धन कमाते हैं और जो व्यक्ति उनका धन लेता है उसमें अनजाने बुराई के भाव उत्पन्न हो जाते हैं।

जो व्यक्ति भीख माँगकर खाता है वह साधन व अभ्यास के अयोग्य हो जाता है। फकीर हो या साधु सबके लिए यही नियम है। क्या कारण है कि बैरागी घर छोड़कर घर-घर मारे-मारे फिरते हैं और उनमें आध्यात्मिकता नहीं आती। उसका कारण स्पष्ट है। इन निकम्मों ने अपने हाथों पावों को तो जवाब दे दिया। दूसरों की झूठन पर जीवन बिताने लगे। जो किसी का झूठा खायेगा वह अपवित्र रहेगा। झूठा वही नहीं है जो किसी की थाली का बचा खुचा हो, बल्कि जो किसी व्यक्ति से रुपया पैसा लेता है, अन्न लेता है, यह सब की सब झूठन है। जो बचा हुआ होता है वही तो दिया जाता है। इसलिए इससे भी बचकर रहने की अत्यन्त आवश्यकता है।

परम सन्त कबीर साहब भीख मांगने के बिल्कुल विरुद्ध थे। उनका वचन है कि-

1. पूरा सत्गुरु ना मिला,

सुनी अधूरी सीख।
सांग जती का पहन कर,
घर घर माँगी भीख॥

2. माँगन मरन समान है,
मत कोई मांगे भीख॥
मांगन से मरना भला,
यह सतगुरु की सीख॥

3. आब गया आदर गया,
मुख से गया सनेह।
यह तीनों तब ही गये,
जब ही कहा कुछ देह॥

जो साधु या फकीर गृहस्थी का अन्न लेता है उसमें फकीरी की शान नहीं होती। जो गृहस्थी किसी गृहस्थी का धन लेता है वह पतित हो जाता है और जो गृहस्थी किसी साधु महात्मा का धन ले लेता है वह ऐसी अधोगति को प्राप्त होता है कि फिर किसी से सुधारे भी नहीं सुधरता है।

एक दृष्टान्त

एक पण्डित किसी शहर में कथा सुनाया करता था। एक दिन उसकी कथा में किसी धनाढ्य पुरुष की स्त्री आई और उसने अपनी नथ को उतार कर जमीन पर रख दिया। कथा की समाप्ति पर वह भूल गई और नथ को वहाँ ही छोड़ गई। जब सब लोग चले गए उस पण्डित की दृष्टि उस नथ पर पड़ी। मुँह में पानी भर आया और चुपके से आकर

उसे जेब में रख लिया। नीयत में मलीनता आ गई, किन्तु आदमी समझदार था सम्भल गया और घर जाते समय राम में सोचने लगा कि मैंने क्यों आज अपनी नीयत बिगाड़ी। पहिले तो ऐसा कभी नहीं हुआ था। इस तरह वह सोचते-सोचते घर पर पहुँचा। अपनी स्त्री को बुलाकर पूछा- ''आज किसके घर से रसोई की सामग्री आई थी''? स्त्री ने उत्तर दिया-''पड़ोस से सुनार ने 'सीधा' भेजा था''। पण्डित ने सुनार को बुलाया। पूछा-''भाई! सच-सच बताना तुमने जो 'सीधा' भेजा था, वह किस तरह का था?'' पहिले तो सुनार उत्तर देने से कतराता रहा। तत्पश्चात् उसने स्पष्ट रूप से कह दिया कि- ''महाराज! परसों एक व्यक्ति नथ बनवाने आया था। सुनारों के स्वभाव के अनुसार मैंने उसके सोने में से एक टुकड़ा काट लिया और नथ बनाकर नथ वाले को दे दी और उससे मजूरी ले ली। मैंने कटे हुए सोने को बाबत सोचा कि चोरी का माल सब क्यों खाऊँ? लाओ उसमें से थोड़ा दान खैरात कर दूँ और यह 'सीधा' जो मैंने आपके घर भिजवाया हैं उसी से खरीदा गया था''। पण्डित के होश ठिकाने हुए। सुनार को तो उसने कुछ न कहा, मगर स्त्री को डाँट बताई कि-''सावधान! आगे किसी का सीधा घर में न आने पावे। जो कुछ मैं कथा से लाऊँ उसी से रसोई बनाई जाये।'' दूसरे दिन उसने कथा के समय वह नथ धनाड्य की स्त्री को दे दी और तीन दिन तक गरीब ने उपवास किया और कुछ दान किया। तब उसके मन में शान्ति आई।

इस तरह दूसरों के अन्न का प्रभाव होता है।

○○○○○

परमार्थ व स्वार्थ प्रदान करने वाली शिक्षा

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर (18.11.1979)

हम दीन अधीन दुःखी जीवों को,
चिता दिया सतगुरु स्वामी ने।
भव सिन्ध में डूबने वालों को,
तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।
मद मोह माया के मारे थे,
दुःख आपत्ति से दुःखयारे थे।
कर दया दृष्टि छुटकारा इन से,
दिला दिया सतगुरु स्वामी ने।
अज्ञान ने भरमाया था हमें,
और करम ने बहकाया था हमें।
सत संगत के वचन से भरम,
मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने।
पहले नहीं गुरु गम को जाना,
जब आँख खुली तब पहचाना।

निज रूप का दर्शन अपने घट में

करा दिया सतगुरु स्वामी ने।

तज पिण्ड को पहुँचा ब्रह्मण्डा,

आगे बढ़ आया सच्च खण्डा।

सत धाम से सत का विमल स्वरूप,

दिखा दिया सत गुरु स्वामी ने।

लख अलख अगम की गम पाई,

ली राधास्वामी पद की शरनाई।

धुर धाम सन्त विसराम लोक,

पहुँचा दिया सतगुरु स्वामी ने।

राधास्वामी राधास्वामी,

राधास्वामी राधास्वामी।

राधास्वामी के नाम का मर्म,

जता दिया सतगुरु स्वामी ने॥

मैंने यह शब्द सुना। अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि जो कुछ यह लिखा हुआ है, क्या यह ठीक है? अगर तू बिना सच्चाई, अर्थात बिना अपने अनुभव के दाता दयाल की वाणी का पक्ष करता है तो तू दोषी, पापी और गुनहागार है। मैंने इसे क्या समझा? मैं इसे कैसे सच मानता हूँ।

हम दीन अधीन दु:खी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने, यह तो आसान शब्द है। मैं अपने आपको दीन समझता था। मैं क्या, सभी अपने आपको छोटा समझते हैं कि हम कुछ नहीं। मेरी यह दशा

थी। मेरे साथ गुरु ने क्या किया? चिता दिया। चिताना क्या था? मुझे समझ दे दी कि असलियत क्या है, तू क्या है, कहाँ से आया है और तेरा क्या परिणाम है? इसे चिताना कहते हैं। मैं क्या चेता हूँ?

भव सिन्धु में डूबने वालों को,

तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

यह ठीक है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि- फकीरचन्द। तू कहीं सन्तों की अनुचित प्रशंसा तो नहीं करता। यह बात नहीं है। मैं मन के चक्कर में बैठा या दाता के चरणों में गया। उन्होंने मेरे अज्ञान को सम्भाला जब मेरी समझ में बात नहीं आती थी तो यह काम दिया जब आप लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है और मैं नहीं होता, तो मुझे विश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर पैदा होता है असल में यह है नहीं। ये केवल संस्कार Suggestions and Impressions हैं। जिस प्रकार किसी ने मेरा नाम सुन लिया,उसे विचार मिल गया या मेरी कोई किताब पढ़ ली तो मेरे ध्यान में बैठ गया। उसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हो गया और उसका काम कर गया। लेकिन मैं तो गया नहीं। मुझे इससे क्या चेतावनी मिली? यह कि मेरे अन्तर जो कुछ पैदा होता है यह कुछ नहीं, केवल संस्कार Suggestions and Impressions हैं और विचार हैं जो मुझे मिले थे और मैं उसे सत्य मानता था जिससे मैं सुखी-दु:खी होता था। जब तुम लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है और मैं नहीं होता। बस इस एक विचार ने मेरी आँखें खोल दीं।

भव सिन्धु में डूबने वालों को,

तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

भव-सिन्ध क्या था ? मन रूपी समुन्दर के जो विचार उठते थे जिसमें हम दु:खी-सुखी, खुश-नाराज होते थे, उसका पता लग गया कि यह क्या है? वह कुछ भी नहीं था। केवल संस्कार Suggestions and Impressions थे,इनमें कोई सच्चाई नहीं थी। जिस प्रकार लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है लेकिन मैं नहीं होता न ही मुझे पता है, तो चेतवान हो गया और सब से निकल गया। अभी भवसागर में हूँ मगर भवसागर, अर्थात् मन के विचार, मुझे दु:खी नहीं करते। मैं इस विचार से इस वाणी को सच्चा मानता हूँ।

भव सिन्धु में डूबने वालों को,
तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने।

मैं अपने मन के चक्कर में ही दु:खी था। कभी राम को ढूँढता था, कभी कुछ करता था, कभी कुछ, किसी से शत्रुता और किसी से मित्रता। मुझे चिता कर आज़ाद कर दिया। वह लिखते थे मगर मैं संकेत नहीं समझ सकता था। मुझे समझाने के लिए यह काम दिया था। मैं न गुरु, न महात्मा हूँ और न ही मुझे गुरु बनने की चाह है। मैं तो केवल यह समझना चाहता था कि यह सन्तमत या राधास्वामी मत क्या बला है जिसने मेरे पूर्वजों की ऐसी तैसी की हुई है ? न राम न कृष्ण, न वेदान्त और न सूफीमत को छोड़ा। मैं सोचता था कि मैं कहाँ फँस गया ? मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा, जो कुछ मिलेगा बता जाऊंगा-

मद मोह माया के मारे थे,
दु:ख आपत्ति से दुखियारे ये।
कर दया दृष्टि, छुटकारा इनसे,
दिला दिया सतगुरु स्वामी ने।

गुरु की दया दृष्टि क्या है ? संसार ने नहीं समझा। मैं स्वयं नहीं समझता था, तुम्हें क्या कहूँ ? गुरु की दया दृष्टि यह है कि वह मानव की बुद्धि को निश्चयात्मिक बना देता है और उसे किसी बात का पूर्ण विश्वास करा देता है।

जब दया दृष्टि हो गई तो
निश्चय की शक्ति मिल गई।

आदमी में विश्वास की शक्ति आ जाती है। मगर वह कब आती है ? जब वह गुरु की संगत में जाकर गुरु की बातों को सुनता, गुनता, सोचता और विचारता है। मगर संसारी लोग भवसागर से निकलने के लिए मेरे पास नहीं आते, न सन्तों के पास जाते हैं। वे तो भव सागर में फँसने के लिए जाते हैं। संसारी मोक्ष के लिए नहीं जाते हैं। वे तो कोई बेटा, कोई धन और कोई बीमारी से छुटकारा चाहते हैं।

अज्ञान ने भरमाया था हमें,
और करम ने बहकाया था हमें।
सत संगत के वचन से भरम,
मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने।

गुरु क्या करता है? सत्संग देकर भरम मिटाता है। मगर किनके ? जो भ्रम मिटाने के लिये जाते हैं। क्या संसार भ्रम मिटाने जाता है ? वे तो संसार से दु:खी हैं। कोई कुछ चाहता है और कोई कुछ चाहता है, यह संसार ही ऐसा है।

गुरु का काम क्या हुआ ? मैंने राधास्वामी-मत में आकर क्या समझा कि यह सारा खेल मन का है। मैं मन से कैसे निकला ? केवल आप लोगों के अनुभवों के द्वारा, जिस कारण मैं सत्संगियों को अपना

गुरु मानता हूँ, क्योंकि इन अनुभवों ने मेरी आँखें खोल दीं ? इस भेद को परदे में रखकर पन्थ, गद्दियाँ और डेरे बन गये और हम गरीबों को अन्धकार में रखकर लूटा गया है। किसी ने सच्ची बात नहीं बताई और अगर बताई भी तो इशारों में। मैं उनका कोई दोष नहीं समझता, क्योंकि हम सच्ची बात सुनने के लिए नहीं जाते हैं।

पहले नहीं गुरु गम को जाना,

जब आंख खुली तब पहचाना।

मैंने गुरु गम को नहीं जाना, यद्यपि मैं गुरुमत में 1905 से शामिल था। मगर मुझे गुरुमत का भेद नहीं मिलता था। अब तुम लोगों की दया से यह भेद मिला। पहली दया तो दाता दयाल की है। अगर वह यह काम न देते तो बात मेरी समझ में न आती। जो गुरु बने हुए हैं, जिनकी समझ में है, वे भी नहीं बताते हैं। अगर वे बतायें तो धन नहीं आता, लोग मत्थे नहीं टेकते और डेरे नहीं बनते।

निज रूप का दर्शन अपने घट में,

करा दिया सतगुरु स्वामी ने।

मुझे पता नहीं कि दाता दयाल का क्या भाव है ? मैं अपना अनुभव कहने का हक रखता हूँ जो मैंने समझा है। दाता दयाल के कहे अनुसार कि शिक्षा बदल जाना, मैंने निज रूप का भाव क्या समझा ? जब तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर है और मैं नहीं होता, तो अब मैं क्या करता हूँ ? मेरे मन के जितने खेल हैं सब समाप्त हो जातें हैं, अर्थात् भूर्भुवः स्वः महः जनः तपःसत्यं सब समाप्त हो जाते हैं. सहस्रदल कंवल त्रिकुटि, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा और सत्लोक भी समाप्त हो जाते हैं। मैं इनका साधन नहीं करता। क्यों नहीं

करता ? जो कुछ भी मेरे अन्तर या किसी के अन्तर दिखाई देता है, ये संस्कार (Suggestions and Impressions) हैं। बाहर से कोई भी नहीं जाता। वह उसका अपना ही मन था। मैं अब मन से ऊपर चला जाता हूँ। आगे प्रकाश और शब्द हैं। प्रकाश में रखकर उस चीज की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह मेरा निज रूप है। प्रकाश मेरा निज रूप नहीं है, प्रकाश मेरे निज रूप का एक शरीर है। शब्द उस चीज़ का गिलाफ है जो शब्द को सुनती है, उसका एक शरीर है। जब वहाँ जाता हूँ अर्थात् अपने निज रूप में जाता हूँ तो शायद ये सन्त कुछ बन जाते होंगे, मगर मेरी बुद्धि नहीं मानती क्योंकि इन निज रूप के मानने वाले महात्माओं का अन्त में क्या परिणाम हुआ, कैसी-कैसी बीमारियों से मरे मैंने देख लिया। फिर मैंने निज रूप को क्या समझा कि मैं कौन हूँ ? मैं कोई भगवान नहीं, परमतत्व नहीं और ना ही कुछ बन गया हूँ। मेरा निज रूप क्या है ? मेरे अन्तर शब्द और प्रकाश के पैदा होने से एक चेतन अवस्था आ जाती है, जिसको सुरत कहते हैं। जिस जगह से सुरत पैदा होती है वह जगत दायम और कायम है।

शब्द प्रगट तब धरिया नाम।

शब्द गुप्त तब रहा अनाम॥

जब कोई चीज़ गति में आयेगी तब शब्द होगा। जब वह परमतत्व गति में आता है तो उस गति से शब्द और रोशनी का पैदा होना अनिवार्य है। उस गति के होने से जो एक चेतनता हमारे पैदा होती है और शब्द को सुनती है, वह मैं हूँ। मैं कौन हूँ ? प्रकृति के खेल (Evolution) में, मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। इसके अतिरिक्त

मेरी कोई और हस्ती नहीं। मैं मालिक को ढूंढने निकला था। मालिक मिला। वह क्या है ? वह ''वह'' अवस्था है जहाँ 'मैं' नहीं रहती। जो मेरी 'मैं' प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर वापिस होती है तो मैं गुम हो जाता हूँ और सब कुछ भूल जाता हूँ। मेरा मस्तिष्क ही फेल हो जाता है। फिर जब होश आती है तब हम कह देते हैं कि जिस मालिक को ढूंढने निकले थे वह अकाल, अनाम, अरूप और अरग था। मैं नहीं मानता क्योंकि जब वह आप ही गुम हो गया तो उसने समझा कि वह अनाम और अकाल है। वह क्या है ? किसी को कोई पता नहीं। मालिक क्या है ? सिवा इसके कि वह है और एक सूक्ष्म तत्व है, और कुछ कहने का हक नहीं। क्योंकि यही बात कबीर साहिब और स्वामी जी महाराज ने कही है। इस वास्ते मैं अपने आपको गलत नहीं समझता। राधास्वामी दयाल ने जेठ महीने में कहा है।

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हिरदे तपन करारी।
सन्त दयाल जीव हितकारी,
भेद कहैं वह निजकर भारी॥

अर्थात असली भेद बताते हैं। क्या बताते हैं ? कि हमारा जो आदि है, जहाँ से हम आये हैं, वो प्रकट हुए हैं, वह क्या है ?

नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत।
कर्ता कारन काज न दिक्कत॥
राम रहीम करीम न केशो।
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो॥

विसमाधि उस अवस्था को कहते हैं जहाँ आदमी सब कुछ भूल जाता है। अन्त में क्या कहा ? अन्तिम अवस्था क्या है ?

नहिं सतनाम व नाम अनामी।

वह क्या अवस्था हुई ? वह अवस्था यह है कि जब आदमी प्रकाश और शब्द को छोड़कर अपनी ओर जाता है तो वह स्वयं ही नहीं रहता। उसकी अपनी हस्ती समाप्त हो जाती है। इसलिए उन्होंने कहा है कि वह न नाम, न अनामी, न सत, न अलख और न अगम है। वह क्या है ? जिसने समझ लिया उसने समझ लिया और चुप हो गया। जिसने नहीं समझा वह टक्करें मारता रहे। बेशक गुरुओं के दरबार में फिरता रहे और यही बात कबीर साहिब ने कही है कि यह भी नहीं है और वह भी नहीं है।

कबीर साहिब कहते हैं–

सखिया वा घर सबसे न्यारा,
जहं पूरन पुरुष हमारा।
जहाँ पुरुष तहवां कछु नाहीं,
कहै कबीर हम जाना।
हमारी सैन लखै जो कोई,
पावै पद निरवाना॥

वह क्या हुआ जहाँ कुछ नहीं ? अपनी हस्ती ही गुम हो जाती है। प्रकृति में क्या है या प्रकृति क्या है या नहीं ? मेरे विचार में शायद यह न कबीर साहिब को पता लगा और न किसी और सन्त को लगा। मैं नहीं कहता कि उन्हें पता नहीं लगा। लगा होगा। फिर मैंने क्या समझा ? मैंने समझा कि जीवन यह है–

लब खुले और बन्द हुए,
यह राज़े जिन्दगानी है।

हमारे अन्तर जब तक हमारी ''मैं'' है, हम इस ''मैं'' के चक्कर में आकर सब कुछ सच मानते हैं. ''मैं'' ही कभी बाप, कभी बेटा, कभी स्त्री, कभी पति, जीव, ब्रह्म, भक्त, साधु और सन्त बनता है। जब हम प्रकाश में जाते हैं तब ब्रह्म बन जाते हैं, और 'अनलहक' मैं ईश्वर हूँ की आवाज़ लगाते हैं। जब शब्द में जाते हैं तो हम अपने आपको शब्द स्वरूप समझने लग जाते हैं। हम असल में क्या हैं ? मुझे तो पता नहीं लगा। मुझे तो यही पता लगा-

खोजत खोजत खो गये,

पाया नहीं अन्त।

वृथा निकली खोज,

खोज से कुछ नहीं बनता ॥

आखिर मैंने खोज की, मुझे क्या मिला ? मुझे यह मिला कि मैं कौन हूँ ? मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ। यह सारी सृष्टि किसी शक्ति के अधीन है। सृष्टि बनती और बिगड़ती रहती है। सब खेल उसका है। न उसका अन्त ईसा मसीह को मिला और न सन्तों को मिला। सब अपनी-अपनी बातें कहकर चले गये। आखिर सच्चाई वर्णन करने से वे भी न टले। वह चैत महीने में लिख गये-

नहीं वहाँ सतनाम, न नाम न अनामी।

इसका क्या भाव ? कि जब आदमी वहाँ चला जाता है तो अपनी हस्ती को परम-तत्व जात में गुम कर लेता है। जब उसे फिर होश आती है तो वह कहता है कि भई ! वहाँ तो न नाम, न अनाम और न सतनाम हैं अर्थात् वहाँ पर कुछ भी नहीं है। उससे मैंने यह परिणाम निकाला कि मैं कौन हूँ ? मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। जिस प्रकार की

प्रकृति मेरे शरीर और मस्तिष्क की बनी हुई है वैसा काम करने के लिए मैं विवश हूँ। मेरे वश की बात नहीं। मेरे क्या, किसी के वश की बात नहीं। छोटा बच्चा कभी आराम से नहीं बैठेगा। कभी लेटा हुआ पांव मारेगा, हाथ मारेगा और कभी हर समय खेलता रहेगा। क्यों ? क्योंकि उसकी प्रकृति शरीर में है। वह विवश है। जब तुम जवानी में आओगे बेशक तुम शरीर न हिलाओ लेकिन तुम्हारा मन हर समय कुछ न कुछ सोचता रहेगा। कोई समय ऐसा नहीं होगा कि जब तक तुम जीवन में हो और तुम्हारा मन न सोचे। बुढ़ापे में सब कुछ भूल जाने को जी चाहता है मैंने ऐसा समझा। आज यह शब्द निकला था। मेरे दिल में विचार आया कि तूने क्या समझा जो मैने जीवन में समझा वह कह चला।

तज पिण्ड को पहुंचा ब्रह्मण्डा,

आगे बढ़ आया सच्च खण्डा।

सतधाम से सत का विमल स्वरूप,

दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

सतधाम का विमल स्वरूप क्या हुआ ? प्रकाश और शब्द कोई और विमल स्वरूप हो, मुझे पता नहीं। सफेद रंग की रोशनी और शब्द यह मेरी समझ में आया है।

लख अलख अगम की गम पाई,

लो राधास्वामी पद की शरनाई।

धुर धाम सन्त विसराम लोक,

पहुँचा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥

वह राधास्वामी धाम विश्राम कैसे हुआ? विश्राम ऐसे हुआ कि अपनी हस्ती ही अपने-आपको भूल गई और विश्राम आ गया। आप रात को गहरी नींद में सो जाते हो। क्या आप विश्राम नहीं करते? संसार को भूल जाते हो सारे दिन के काम को भूल जाते हो। इसी प्रकार हम जागते हुए अपने आपको उस अवस्था में ले जाकर विश्राम करते हैं। विश्राम का क्या भाव है? जहाँ हम सब कुछ भूल जाते हैं। हमारी टाँग कटी हुई है और उसका आपरेशन हुआ है हम गहरी नींद में जाकर भूल जाते है कि हमारी टाँग कटी हुई है या नहीं कटी हुई है। मैं विश्राम ऐसा समझता हूँ।

राधास्वामी राधास्वामी,

राधास्वामी, राधास्वामी।

राधास्वामी के नाम का मरम,

जता दिया सतगुरु स्वामी ने।

राधास्वामी शब्द का जो मरम अर्थात् भेद है वह समझ दिया। वह राधास्वामी क्या है? जहाँ से Self निकला है? उसे अकाल, अनामी पुरुष और बेअनामी समझ लो। वहाँ गति हुई तो मेरे अन्तर शब्द और चेतनता आ गई। अपने-आपको उस अवस्था में ले जाने का नाम राधास्वामी हैं बेशक मुँह से कोई राधास्वामी मत कहे मगर अपने आपको इतना ऊँचा ले जाकर अपनी जात में अपने-आपको भूला देने की अवस्था का नाम राधास्वामी धाम या अनामीपद है। अगर इसके अतिरिक्त कुछ और राधास्वामी है तो राधास्वामीमत वालो! मुझे पता नहीं लगा। अगर तुम जानते हो तो मुझे समझा दो। मैं हेराफेरी नहीं जानता। मैंने सच्चाई वर्णन कर दी ताकि निजी स्वार्थ, निजी मान और

निजी धन के लिए मुझ पर कोई पाप न चढ़े।

अपना भाग जगाओ। भाग टुकड़े को कहते हैं हमारे मस्तिष्क में खोपड़ी के अन्तर जितने Cells Function करते हैं, जो आदमी अपने अन्तर साधन करता है उसके सारे Centre खुल जाते हैं। इसका नाम भाग जागना है। लोगों ने भाग जागने का यह अर्थ समझा हुआ है कि आदमी भाग्यशाली बन जायेगा। अगर तुमने पिछले जन्म में दिया हुआ नहीं है तो क्या लोगे? तुम्हें नाम जपने से रुपया नहीं मिलेगा। संसार भूला हुआ है। नाम जपने से तुम्हारे मन को शान्ति और तुमको अनुभव होगा लेकिन संसार का सुख तुम्हारे कर्म से मिलेगा। इसलिए कर्म किया करो। किसी की सहायता की हुई है तो तुम्हारी सहायता होगी। अगर तुमने किसी की सहायता नहीं की हुई है तो तुम्हारी कहाँ से होगी। यह कलियुग है। लेना देना बना हुआ है। जो देता नहीं उसे कुछ नहीं मिलता मैंने सारा जीवन दिया हुआ है मुझे मिलता है। अपना अनुभव बताता हूँ। जो आदमी परदा रखकर दान लेकर खाता है जबकि उसके पास अपना धन है। साधु लोगों के पास अपना धन होता है फिर भी ये माँगते फिरते हैं ये दोषी हैं और गलती करते हैं। अगर आपके पास धन नहीं हैं तो ले सकते हो मगर वह भी कुछ समय के लिए पेट भरने या सर्दी से बचने के लिए कपड़ा। इकट्ठा नहीं कर सकते। जो दूसरे दिन के लिए धन इकट्ठा करते हैं वे दोषी हैं।

॥ सबको राधास्वामी ॥

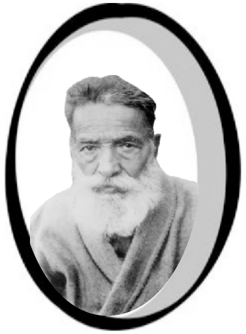

कर्म-विचार

परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर (28.10.73)

हँसा छोड़ो कर्म की आसा।
कर्म काल सब जगत् नचावे, फिर फिर करे ग्रासा।
उपजन विनसन कर्म ही किये, कर्म ही जगत् विनासा,
कर्म की काल ब्याल पुनि कर्म ही, कर्म ही सब त्रासा।
जप जप कर्म बाँध जग राखे, पाप-पुन्य विश्वासा,
कर्म ही देवल, तीर्थ कीने, कर्म ही अल्ला उदासा।
कर्म ही योग ध्यान तप पूजा, कर्म चढ़ावे दासा,
कर्म ही दुःख सुख जड़-चेतन है, तीन लोक प्रकासा।
कर्म ही दे ले पुन्य कर्म ही, यज्ञ दान देह वासा,
जीतना भूत कर्म के वश है, चार विचार निवासा।
कर्म दुःखी दारिद्री कहिये, कर्म ही भोग विलाला,
कर्म विकार राह तज बैठो, कहें कबीर सुख बासा।

दोस्तो राधास्वामी! किसी को सत्संग नहीं कराता बल्कि अपने-आपको ही कराता हूँ। छोटी आयु से राम को मिलने निकला हुआ था। रामायण से विचार था कि वो मालिक अवतार लेकर आता है-

नाना भाँति राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा।

राम को मिलने के लिए मेरे अन्दर एक प्रबल चाह तथा तड़प थी। इस तड़प में एक बार 12 घंटे रोया। उस समय हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज का एक दृश्य मुझे नजर आया। मैंने उसको राम समझा। मौज मुझे उनके चरणों में ले गई। मैंने उनसे बहुत प्रेम किया तथा उनकी पूजा की। उन्होंने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी तथा राधास्वामी मत की शिक्षा मुझे पढ़ने को दी। इनमें सब मत-मतान्तरों का खण्डन था। पढ़कर मेरा मन चकराता था। अपने बजुर्गों का खण्डन कौन पढ़ सकता है ? सन्तमत को सबसे ऊँचा बताया गया है। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मत के नियमों पर सच्चा होकर चलूँगा तथा अपना अनुभव संसार को बता जाऊँगा। सम्भव है कि जो कुछ मैंने समझा है वो गलत हो। लेकिन मेरी नीयत बिल्कुल साफ है। पहले जो मंगलों का शब्द पढ़ा गया है इसमें एक कड़ी है कि-

काल कर्म काट धुर लय पहुँचाया।

अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तू धुर लय पहुँच गया? कुबेर नाथ जी तथा इंजीनीयर साहिब! आप आये हैं मुझे गुरु बनने की चाह नहीं है। जीवन में एक खोज थी तथा अब भी है। जो कुछ मैंने समझा बाणी उसको ही कहती है इसलिए मुझे हौसला मिलता है कि जो कुछ मैंने समझा है वो ठीक है। मैंने इस लाईन में रिसर्च की है। मुझे समझ आई है कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। क्रान्ति के सिलसिले में मेरा जीवन माद्दा से बना है। सितारों की किरणों तथा बाहरी संस्कारों से मेरा मन बना है। यह जो मेरे शब्द और प्रकाश हैं यह भी बाहर के

प्रकाश और शब्द से आये हुए हैं। मैं जो इस मंजिल पर पहुँचा हूँ यह सब आप लोगों के कारण पहुँचा हूँ। यह इंजीनीयर साहिब बैठे हुए हैं इनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ। मुझे प्रतिदिन और भी पत्र आते हैं क्योंकि मैं नहीं जाता तथा न ही मुझे कोई ज्ञान होता है तो मुझे यह समझ आई कि जो कुछ भी किसी के अन्दर प्रकट होता है वो उसकी अपनी वासना के अनुसार होता है। जिस प्रकार के संस्कार पढ़ने से, सुनने से या प्रारब्ध कर्म अनुसार व्यक्ति के दिमाग में होते हैं वो जब घने हो जाते हैं तो जाग्रत, स्वप्न या समाधि में उसके सामने आते हैं इसलिए मैं अब रूप-रंग को छोड़कर आगे जाने का प्रयत्न करता रहता हूँ। आगे प्रकाश और शब्द है। प्रकाश को देखता हूँ तथा शब्द को सुनता हूँ। वहाँ उस चीज़ की तलाश करता रहता हूँ जो प्रकाश को देखती तथा शब्द को सुनती है उसका मुझे अन्त नहीं मिलता।

आप लोग आ जाते हैं। आप बड़े आदमी हैं। मैं आप लोगों या गरीबों को धोखा देकर अपने पीछे नहीं लगाना चाहता। चार दिन का जीवन है तथा एक दिन चले जाना है। 'धुरपद' क्या है? यदि मैं यह कह दूँ कि मेरी सुरत ही सब कुछ है तो फिर मुझ में यह शक्ति होनी चाहिए कि मैं कुछ कर सकूँ। अगर मैं अलख या अनामी बन गया हूँ तो अपनी बीमारी को दूर कर सकूँ या जो मेरा मन चाहे कर सकूँ लेकिन मैं कर नहीं सकता। लोग कहते हैं कि बाबा जी! आपने हमारा यह काम कर दिया तथा वो काम कर दिया। आपने अमुक समय हमारी सहायता की लेकिन मैं सच कहता हूँ कि मैं किसी की सहायता करने नहीं जाता। यह सब तुम्हारी आशा, नीयत तथा विश्वास है जो तुम्हारी सहायता करते हैं। मैं तो केवल उत्साह तथा विचार ही देता हूँ।

सोचता हूँ शायद मुझ में यह शक्ति न हो। हजूर दाता दयाल जी या दूसरे सन्त अनामी धाम में रहते थे उनमें यह शक्ति होगी। लेकिन कैसे मानूँ? हजूर दाता दयाल जी महाराज की धाम उजड़ गई, सन्तों के जवान लड़के मर गये, पलटू साहिब का क्या हाल हुआ। इसलिए मैं इस परिणाम पर आया कि वो मालिक बेअन्त हैं। उसमें गति होती है। दयाल देश, काल देश, शब्द व प्रकाश तथा जीव-जन्तु बन जाते हैं, उनमें सूरत आ जाती है। फिर आत्मा है। इससे नीचे मन बन जाता है, फिर शरीर तथा बोधभान पैदा हो जाते हैं। इस ज्ञान का होना कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ तथा उस मालिक की मौज से बना हूँ और उसकी मौज से टूट जाऊँगा। यह समझ कर दुनिया में बेफिक्र और बेगम रहने का नाम मेरी समझ में 'धुर पद' है क्योंकि कबीर साहिब ने भी यही कहा है इसलिए मुझे हौसला है कि मैं ठीक हूँ। वो लिखते हैं-

हँसा छोड़ो कर्म की आसा।

वो कहते हैं कि कर्म की आशा छोड़ दो। मेरा यह अनुभव है कि कर्म तुम स्वयं नहीं करते। ये कर्म स्वाभाविक ही प्रकृति की तरफ से बने हुए हैं। जिस प्रकार के किसी के ग्रह पड़े हुए हैं वो उसके अनुसार गति करने के लिए विवश हैं। इसका प्रमाण देता हूँ- श्री के.एस. मुन्शी जो बहुत बड़े नेता हुए हैं तथा यू.पी. के गवर्नर रह चुके हैं, उन्होंने एक किताब लिखी जिसके तेरह पाठ हैं। पहले 12 पाठ में तो उन्होंने लिखा है कि व्यक्ति के अन्दर बहुत भारी ताकत है। वह जो चाहे कर सकता है लेकिन तेहरवें पाठ में लिखा है कि जो कुछ मैंने इन 12 पाठों में लिखा है यह सब गलत है। वो लिखते हैं कि बचपन में मेरा बाप मर गया। मेरी माँ बहुत गरीब थी। मैं बीमार हो गया तो मेरी

माँ मेरा जन्मपत्रा लेकर ज्योतिषी के पास गई। उसने कहा कि तेरे बच्चे के ग्रह ऐसे हैं कि एक दिन गवर्नर बनेगा। तुम चिन्ता मन करो इसको कुछ नहीं होगा। ख़ैर मैं स्वस्थ हो गया। पढ़ने में मैं बहुत होशियार था। प्रारम्भ से अन्त तक वजीफ़ा लेता रहा और एक समय आया कि पढ़-लिख कर मैं यू.पी. का गवर्नर बना। इसलिए जो कुछ होना होता है वो पहले ही लिखा हुआ होता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि चिन्ता, फिक्र क्यों करते हो-

हँसा छोड़ो कर्म की आसा,
कर्म काल सब जगत नचावे, फिर फिर करे ग्रासा।

यह प्रकृति का नियम है। यह जो अपना कर्म करता है लेकिन हम यह समझते हैं कि हमने किया और हम यह करेंगे और वो करेंगे। हम में एक 'मैं' आ जाती है। वो कहते हैं कि इसको छोड़ो और शरणागत हो जाओ।

कर्म ही काल, काल पुनि कर्म ही,
कर्म ही की सब त्रासा।

यह जितने भी गति में है चाहे चाँद, चाहे सूर्य, चाहे सितारे, चाहे पृथ्वी से बस कर्म के चक्कर में है। हम भी तो सब कर्म के चक्कर में है। कई बार सोचता हूँ कि फ़कीर तुम अपने आपको सन्त सत्तगुरु वक्त कहते हो तथा लोग भी तुमको गुरु समझ कर तुम्हारे पास आते हैं। बताओ, फिर तुम को क्या मिला? मुझे यह मिला कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। वो मालिक अकह, अपार, अगाध और अनाम है। किसी को उसका अन्त नहीं मिला। किसी ने उसको 'हैरत रूप'

कह दिया, किसी ने बेअन्त कह दिया। फिर हमको चाहिए कि हम अपने-आपको उस प्रकृति के अर्पण कर दें तथा राज़ी-बेरज़ा रहें। प्रकृति ने किसी से जो काम लेना है वो उसके अनुसार उनके दिमाग को गति देती रहती है। आदमी के वश में कोई बात नहीं है। हम दूसरे व्यक्तियों को तो यह दोष दे देते हैं कि उसने यह किया और वो किया लेकिन उसके भी वश की कोई बात नहीं है। बड़े-बड़े महापुरुष कई ऐसे गिरे कि कहने, सुनने और समझने से बाहर। यह उनके वश की बात नहीं थी बल्कि उनका कर्म था।

इंजीनीयर साहिब! आपको खास उन्नति मिली यह आपके कर्म में थी। न मैंने और न आपने कुछ किया। यदि व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाये कि मेरे वश में कुछ नहीं है तो उसका जीवन सुख से गुजर जायेगा। क्योंकि हमको ज्ञान नहीं है इसलिए हम प्रत्येक काम में अपनी 'मैं' को जोड़ देते हैं। परिणाम यह होता है कि हम दुःख उठाते हैं तथा सुख भी भोगते हैं-

जप तप कर्म बाँध जग राखे, पाप पुन्य विस्वासा।

क्योंकि तुम किसी उद्देश्य के लिए जप, तप करते हो और कर्म उद्देश्य है तो फिर कर्म का फल अर्थात् दुःख और सुख से कैसे बच सकते हो। यह अवश्य भोगना पड़ेगा-

कर्म ही देवल तीर्थ कीने, कर्म ही अल्ला उदासा,
कर्म ही योग ध्यान तप पूजा, करे चढ़ावे दासा।
कर्म ही दुःख सुख जड़ चेतन हैं, तीन लोक प्रकासा।

सभी लोक-लोकान्तरों में कर्म का चक्कर है। कर्म का अर्थ है

गति। तथा यह गति प्रत्येक स्थान पर है। हमारे शरीर में भी गति है जिसका हमको पता नहीं। इसलिए क्या करना चाहिए ताकि हमको समझ व शान्ति आ जाये, सन्तमत में क्या मिलता है? लोग समझते हैं कि सन्त बीमारी को दूर कर देते हैं। जो अपनी बीमारी को दूर न कर सके तो तुम्हारी बीमारी को कैसे दूर कर देंगे। वो अपने बच्चों को न बचा सके तो तुम्हारे बच्चों को कैसे बचा सकते हैं। पलटू साहिब कहा करते थे–

साधो हम वहाँ के वासी जहाँ पहुँचे न अविनासी।

दूसरी बात वो यह कहा करते थे कि जो काम ईश्वर और परमेश्वर नहीं कर सकते वो सन्त कर सकते हैं लेकिन पलटू साहिब के साथ क्या गुजरी? दूसरे साधुओं ने उनको उठाकर खोलते हुए तेल के कड़ाहे में डाल दिया तथा उनके जीवन का अन्त हो गया। सन्तों ने अपने नाम व अपने डेरों के लिए रोचक व भयानक बातें लिखीं। ब्राह्मणों के राज्य में ब्राह्मणों का बोलबाला हुआ, बौद्धों के राज्य में भिक्षुओं की गुड्डी चढ़ी, मुसलमानों के राज्य में काज़ियों की गुड्डी चढ़ी और अब सन्तों के राज्य में सन्तों का बोलबाला है।

हजूर दाता दयाल जी ने मेरे बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ है इसलिए उनकी आज्ञा को मानने के लिए मैं यह कार्य करता हूँ। यदि तुम गलत ढंग से साधुओं की सेवा करोगे तो तुम गलती पर हो। कबीर साहिब ने साधु की महिमा में एक जगह लिखा है–

बेटा बेटी स्त्री साधु कहें सो दे,

सर साधु को सौंप कर जन्म सफल कर ले।

तो क्या हम साधुओं को बेटियाँ दें? मैं सन्त सतगुरु वक्त हूँ। दूसरे महात्मा अपने शिष्यों से अपना प्रोपेगण्डा करवाते हैं परन्तु मैं अपनी मशहूरी आप करता हूँ। मैं इस संसार में सच्चाई ही बयान करने आया हूँ। अब तुम सोचो कि जो व्यक्ति इस वाणी को पढ़ेगा क्या वो साधुओं की सेवा करेगा और धन देगा? और ऐसे ही औरतें भी उसकी सेवा करेंगी? लेकिन यह कोई नहीं सोचता कि यह साधु है भी कि नहीं। दुनिया व्यर्थ में अज्ञानवश लुटी जा रही है। मैं इस बार दशहरे पर दिल्ली सत्संग कराने गया। वहां सन्त कृपाल सिंह जी महाराज तथा मुनि सुशील कुमार जी महाराज भी आये हुए थे। मैंने उनके सामने कहा कि मैं सन्त सत्तगुरु वक्त हूँ और वो शिक्षा देता हूँ जिसकी इस समय आवश्यकता है। वो मालिक एक तत्त्व है। उसका किसी ने अन्त नहीं पाया तथा न ही कोई उसको जान सका। मैं कई बार वेदान्तियों पर नाराज़ होता हूँ जो अपने आपको ब्रह्म कहते हैं। ज़रा सोचने की बात है कि उस मालिक की कितनी रचना या कितनी खिलकत है? करोड़ों सूर्य और करोड़ों चाँद है, कितने जीव जन्तु हैं। इतनी रचनाएँ इन्सान की हस्ती ही क्या है? लेकिन मानव खुदा बनता है, कितनी भूल है :–

साध मिले ये सब छूटे, काल माल यम चोट।

सीस निवावत ढै पड़, रख पापन के पोट।

यह रोचक वाणी है। साधु के आगे मत्था टेकने से क्या तुम्हारे पाप दूर हो जायेंगें? मैं साधु की महिमा को जानता हूँ। साधु की वाणी पर अमल करने से तुम्हारे पाप दूर होंगे। यदि तुम मेरा मन्दिर बना दो या मेरे गले में सोना डाल दो या मुझे रुपये दे दो तो तुम्हारे पाप नहीं

छूटेंगे। सत्संग में मेरी बात को सुनो उसको समझो और फिर उस पर अमल करने से तुम्हारे पाप दूर होंगे। हज़ारों और लाखों लोग कोई कुम्भ पर जाता है, कोई चिन्तपूर्णी जाता है, कोई आनन्दपुर जाता है और कोई कहीं जाता है। क्या उनके वहाँ जाने से पाप समाप्त हो जाते हैं? पाप तो अमल करने से दूर होते हैं।

सभी धर्मों और मत-मतान्तरों ने रोचक और भयानक वाणियां लिख-लिख कर दुनिया को अपने पीछे लगाया और अपने बोझा ढोने का जानवर बनाया। लोगों की गाढ़ी कमाई का धन खाया और संसार में नफरत, द्वेष व ईर्ष्या को फैलाया। इसी धार्मिक घृणा ने पाकिस्तान बनाया। अरबों और इजराइलियों को लड़ाया तथा जगह-जगह धार्मिक झगड़ा फैलाया। मैं पूछना चाहता हूँ कि इस अज्ञान से दुनिया ने क्या लाभ पाया? साधु की महिमा तो यह है कि वो समझ और विवेक देता है। इसीलिए तो तुलसी दास जी ने कहा है:-

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, कटे कोटि अपराध॥

इस बात को मैं मानता हूँ। कैसे? अपराध का अर्थ है गलती। साधु की संगत से बात को समझ कर फिर तुम गलती नहीं करोगे। मेरे पास लोग आते है। कोई कहता है बाबा जी! मेरी गरीबी दूर हो जाये। कोई बेटा चाहता है। किसी का कोई मुकद्दमा है, कोई किसी बीमारी से छुटकारा चाहता है, किसी की लड़की की शादी नहीं होती। समझ और विवेक को प्राप्त करने कौन आता है? अरे भाई! यह तो सब कुछ तुम्हारे कर्म का फल है। जो कुछ तुमको मिला है वो तुम्हारे कर्म से,

जो कुछ मिल रहा है तुम्हारे कर्म और जो कुछ मिलेगा वो तुम्हारे ही कर्म से मिलेगा। इसलिए इंजीनियर साहिब आप आये हैं, आपका मन चाहे आओ मन न चाहे बेशक न आओ। आप का मन चाहे तो मेरी कोई पुस्तक पढ़ो न चाहे तो न पढ़ो। आपका मन चाहे तो मन्दिर में पैसा दो न चाहे तो न दो, लेकिन मैं झूठी बात कह कर किसी को अपने पीछे लगाना नहीं चाहता। चार दिन का जीवन है। मैंने भी एक दिन मर जाना है। मुझे अपने नाम की आवश्यकता नहीं है। मेरे नाम दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा है :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुःखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुःखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मेरा अंग है मेरी वाणी इस पर यदि अमल करोगे तो बेड़ा पार हो जायेगा। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसके विश्वास का फल मिलता है। सूबेदार हजारी सिंह का पत्र परसों मैंने सत्संग में सुनाया था। उसने लिखा था कि बाबा जी! हम लोग कई व्यक्ति बाल-बच्चों सहित दो गाड़ियों में बैठकर धनुष्कोटि देखने के लिए तैयार थे। मेरे अन्दर अचानक यह विचार आया कि शायद आज हम धनुष्कोटि न पहुँच सकेंगे। आपका रूप मेरे अन्दर प्रकट हुआ और फरमाया कि चिन्ता मत करो, मैं किसी को मरने नहीं दूँगा। हम रवाना हो गये। मालिक की मौज। रास्ते में एक गाड़ी उलट गई। उसी में मैं भी था। गाड़ी ने चार पलटे खाये। नीचे मेरा बच्चा, उसके ऊपर मैं तथा मेरे

ऊपर गाड़ी। दूसरी गाड़ी रुकी और उन्होंने हम सब को निकाला, और भी लोग ज़ख्मी हुए लेकिन सब से ज्यादा चोट मुझे लगी। मेरी पसलियाँ टूट गई। हम लोगों को अस्पताल पहुँचाया गया। लेकिन मुझे काफी कष्ट था। रात को आप आ गये तथा मेरी पसलियों को दबाते रहे, मुझे 50% आराम हो गया। फिर आप मेरी पत्नी के पास गये वो आपका फोटो रखकर मेरे स्वास्थ्य के लिए आप से प्रार्थना कर रही थी। आपने कहा मैं तेरे पति के पास से आ रहा हूँ वो शीघ्र ही ठीक हो जायेगा। प्रात: मैंने अपना हाल पत्नी को बताया तथा उसने अपना हाल मुझे बताया। वो कहती है कि मैं तीसरी मंजिल पर थी। मकान के सभी दरवाजे बन्द थे और आप एक खिड़की के रास्ते जो कि खुली थी तीसरी मंजिल वाले मकान के भीतर दाखिल हुए तथा फिर उसी रास्ते वापिस चले गये।

जब मैं ऐसी-ऐसी बातें सुनता हूँ तो हैरान होता हूँ कि मैं तो गया नहीं तो वो कौन गया। यही एक पर्दा है जिसके कारण दुनिया को मूर्ख बना कर लूटा गया है। यह सब तुम्हारा अपना विश्वास है चाहे सगुण पर रखो, चाहे निर्गुण पर रखो। वो जो रूप प्रकट होगा उससे तुम्हारे सांसारिक काम तो होंगे लेकिन तुमको ज्ञान, योग्य और जीवित सन्त सत्तगुरु से ही मिलेगा। इंजीनियर साहिब! आपने कल एक गर्म चादर मुझे दी। मैं आपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुमको चादर लेने का क्या अधिकार है? मेरे पास से ज्ञान ले जाओ और ज्ञानदाता की हैसियत से यदि कोई मुझे कुछ देता है तो मैं लेने के लिए तैयार हूँ और यदि अज्ञान से कोई व्यक्ति मुझे कुछ देना चाहे कि बाबा जी ने यह कर दिया, वो कर दिया तो जब मैं कहीं जाता नहीं तथा न ही किसी की

सहायता करता हूँ तो किसी से कोई वस्तु लेने का मुझे कोई अधिकार नहीं। सन्तों की रोचक और भयानक वाणी ने दुनिया को सन्तों के जाल में जकड़ दिया। कबीर साहिब ने लिख दिया:-

बेटा, बेटी स्त्री, साध कहे सो दे।
सर साधु को सौंप कर, जन्म सफल कर ले।

अब जो इस वाणी को पढ़ेगा वो क्या करेगा? सुनो, अमृतसर से मेरे पास एक व्यक्ति आया। उसने मुझे बताया कि मेरे गुरु का मेरी पत्नी के साथ नाजायज सम्बन्ध है। अब मैं यदि अपने गुरु से कुछ कहता हूँ तो मुझे पाप लगेगा और वो मुझे शाप दे देगा। ऐसे-ऐसे भ्रम गृहस्थियों के दिलों में भर दिये हैं कि जिनका कोई ठिकाना नहीं। सोचो, यह मेरे जीवन के अनुभव हैं। इसलिए मैंने सच्चाई से काम लिया है।

कई वर्षों की बात है कि एडीटर 'रसाला सारी दुनिया' डेरा व्यास ने एक नौजवान जोड़े को मेरे पास भेजा। पत्नी को भूत आता था उनके कोई बच्चा नहीं था। मैंने पूछा कि शादी को कितना समय हुआ है? बोला कि सात वर्ष। मैंने लड़के से पूछा कि क्या तू नामर्द है? उसने स्वीकार किया। क्या तुम सत्संगी हो? बोला-जी हाँ। मैंने स्त्री से कहा कि क्या कोई साधु तुम्हारे यहां सत्संग कराने आया करता था। बोली कि आया करता था। क्या उसने तेरा सत्त लिया? मैंने लड़के से कहा कि तुम नामर्द हो। इसने काम का स्वाद लिया अब वही स्वाद और वही ख्याल इसको भूत बनकर सताता है। जो इलाज मेरी समझ में आया मैंने उनको बता दिया और वो चले गये। इसलिए साधु की

महिमा है:-

भूमि पवित्र होय सन्त जहाँ पग धरें।

बशते कि कोई पूरा सन्त हो। मैं स्वयं अभी तक गिरता रहता हूँ। मैं वो सत्संग दे रहा हूँ जिसके बारे में सन्त फरमाते है कि सौ वर्ष की इबादत से ढ़ाई घड़ी का सत्संग बेहतर है। इबादत से तुमको जो कुछ समझ आयेगी उससे तुमको जीवन के अनुभव होंगे लेकिन योग्य पुरुष तुमको शीघ्र समझा देगा कि ऐसा नहीं ऐसा करो। मैंने सारा जीवन बहुत अभ्यास किया है तथा अब भी करता हूँ लेकिन मुझे कोई दावा नहीं। जब मानव को यह ज्ञान हो जाता है कि यह संसार हमारे ही कर्म का है और यह सारा उस मालिक की मौज का है तो फिर वो हाय-हाय नहीं करता तथा उसका जीवन सुखी हो जाता है :-

सन्त जन मारग विहँग बतावे।

विहँग पक्षी होता है। पक्षी क्या करता है? एक शाखा से दूसरी शाखा पर चला जाता है, दूसरी से तीसरी पर पहुँच जाता है अर्थात् वो चंचल है। एक जगह आराम से नहीं बैठ सकता। ऐसे ही मानव को चाहिए कि वह अपने विचार को एक अनुभव से गुजारे। जब उसके हानि-लाभ को देख ले तो फिर उसको छोड़ दे तथा दूसरा अनुभव करे लेकिन हम लोग उसको छोड़ते नहीं हैं तथा हानि उठाते है। कल चण्डीगढ़ से एक नवयुवक आया। पहले भी आया करता था। एक लड़की से उसको प्रेम हो गया। कहने लगा कि उससे शादी करूंगा। उसके मां-बाप ने मुझे बताया। मैंने कहा कि ठीक हो जायेगा। उस लड़की ने किसी दूसरे लड़के से प्रेम करना आरम्भ कर दिया जब

उसको मालूम हुआ तो उसने उस लड़की को मारा। अब उस लड़की ने दोबारा उससे प्रेम करना शुरु कर दिया। मैंने उस लड़के को कहा कि जब तुम्हें यह अनुभव हो गया कि यह बेवफ़ा है तो उसे जाने दो। इसलिए जब अनुभव हो जाता है तो उसे छोड़ दो और दूसरा अनुभव करो। यह दुनिया का विहँगम है। हमारा विहँगम क्या है? हम सहस्त्रदल कमल या त्रिकुटी में अभ्यास करते हैं हमारे मन में तरह-तरह के विचार पैदा होते हैं। हम अपने इष्ट के द्वारा उनको रोकते हैं और वो खत्म हो जाते हैं। हम अपने इष्ट से प्रेम करते हैं तथा आनन्द लेते है। यदि साधन में किसी को आनन्द नहीं मिलता तो साधन गलत है। इसलिए अपने साधन को ठीक प्रकार से करो जब एक स्थान का आनन्द ले लिया तो फिर उसको छोड़कर आगे चलो। लेकिन तुम लोग वहाँ ही उसी आनन्द में फँसे रहते हो। यदि एकतावाद में तुमको सुख मिलता है तथा तुम उसको छोड़ कर फिर अनेकवाद में फँस जाते हो तो यह चाल तुम्हारी विहँगम चाल नहीं है। तुम प्रतिदिन देखते हो कि लोग मरते हैं तथा तुमको यह भी पता है कि एक दिन हमने भी मर जाना है। कोई मर जाता है तो हम रोते हैं। जब हमको यह मालूम है कि एक दिन हमने भी मर जाना है तो फिर रोने से क्या लाभ?

पहले अनेकवाद में जाओ फिर त्रिकुटी में जाओ तथा खूब प्रेम करो और आनन्द लो। फिर सुन्न में जाओ और महासुन्न में जाओ, खूब मस्ती और खुशी लो। फिर नीचे मत आओ बल्कि ऊपर चलो। मैं अनुभव के बाद इन सब को छोड़ गया हूँ। अब केवल ऊपर जाता हूँ क्योंकि नीचे का तो मुझे अनुभव हो गया तथा पता लग गया कि यह मेरे मन की कल्पना के सिवाय और कुछ नहीं है :-

सन्त जन मारग विहँग बतावे।
कौन घर से जीव की उत्पत्ति, कौन घर को जावे॥

जब महासुन्न में समाधि लग जाती है तो फिर यह समाधि लग जाती है कि मेरा मन यहाँ से निकला है, इस मानसरोवर से निकला है। उसका नाम सन्तों ने मानसरोवर रख दिया। वहाँ पानी नहीं है। वहाँ जा कर मन की लहरें इकट्ठी हो जाती हैं। ओम् का जो बिन्दू है उसका नाम महासुन्न है। आप लोगों ने मुझे रूप और रंग से बाहर निकाला, आप लोगों के अनुभवों से ही मुझे यह समझ आई।

यह भूपसिंह बैठा हुआ है। किसी कारणवश यह अशान्त था। देहली कुतुब मीनार से कूद कर आत्महत्या करने लगा तो मेरा रूप इसके अन्दर प्रकट हुआ और कहा कि भूपसिंह जाग! जाग!! जाग!!! तेरा जागने का समय आ गया है। उसने बताया कि इतना कहकर आप आकाश की ओर चले गये तथा जाते समय आप ने कहा:-

एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

मैं तो गया नहीं तो फिर वो कौन गया? इसका अपना ही मन और अपना ही विश्वास। क्योंकि इसे दु:खों से बचने की इच्छा थी तथा सच्ची तड़प थी इसलिए प्रकृति ने इसका प्रबन्ध कर दिया। इंजीनियर साहिब! सच्चा गुरु तुम्हारे अन्दर रहता है, वो बाहर नहीं है। बाहरी गुरु का तो केवल यह कर्त्तव्य है कि वो तुमको केवल असली घर का पता दे दे :-

घर में घर दिखलाय दे, सो सत्तगुरु पुरुष सुजान।

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द लिखा है :-

यह मन समझन जोग साधो, यह मन समझन जोग।
मन ही ज्ञान और मन ही ध्यान है, मन ही मोक्ष और भोग॥

मुझे इस मन की समझ नहीं आती थी। मन का रूप समझाने के लिए हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह गुरुआई दी थी तथा यह काम करने को कहा था। उन्होंने फरमाया था कि फकीर! तुम्हें सच्चे सत्तगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे तथा अब हो गये। मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और उनकी सहायता करता है। लेकिन मैं नहीं होता तो फिर उनके अन्दर कौन जाता है? उनका अपना ही विश्वास । काश! यह महात्मा संसार को सच्चाई बताते। लेकिन किसी ने सच्ची बात नहीं बताई, सब पर्दा रख गये। रुपया नहीं आता, सत्कार नहीं मिलता तथा दायरा नहीं बनता। कैप्टन लाल चन्द ने बताया कि इनका एक सिपाही कहीं गया तो रास्ते में कुछ साधु बैठे हुए भंग रंगड़ रहे थे। उसको उन पर क्रोध आया और उसने उनको बुरा-भला कहा और उनका कुण्डा (जिसमें वो भंग रगड़ रहे थे) तोड़ दिया। एक साधु ने कहा कि तुमने हमको तंग किया है तुम अन्धे हो जाओगे। सिपाही के मन में यह विचार आ गया कि कहीं सचमुच ही अन्धा न हो जाऊँ। उसके विचार को कमजोरी के कारण उसकी नजर कमजोर हो गई। मिलिट्री अस्पताल में गया तो डाक्टर ने कहा कि तुम बहाना करते हो। कैप्टन लाल चन्द ने क्योंकि मेरे सत्संग सुने हुए थे इसलिए यह उस कारण को समझ गये उन्होंने उसको मेरा फोटो दिया और कहा कि देखो, यह गुरुओं के गुरु हैं इनके आगे प्रार्थना करो तुम्हारी नजर ठीक हो जायेगी। उसने ऐसा ही किया और

उसकी नजर ठीक हो गई। तो अब मैं सोचता हूँ कि क्या मैंने उसकी नजर ठीक की ? मैं तो उसको जानता तक नहीं हूँ। वो सिपाही हिन्दु था। हिन्दुओं में यह विचार पाया जाता है कि साधु शाप दे दिया करते हैं। इस विचार का प्रभाव उसकी नजर पर पड़ा। जब कैप्टन लाल चन्द साहिब ने उसको दूसरा विचार दिया तो फिर उसकी नज़र ठीक हो गई इसलिए यह सब विचार की दुनिया है। मानसिक जगत है इसलिए अपने विचार को ठीक रखने का प्रयत्न करो।

एक बार मैं हनमकुण्डा (आन्ध्र प्रदेश) गया हुआ था। परस राम (साकन आदमपुर) भी मेरे साथ था। एक दिन रविवार को परस राम की पत्नी स्टेशन के लिए रवाना हुई। प्रात: का समय था और अन्धेरा था। उसने गाड़ी से होशियारपुर आना था। रास्ते में अकेली होने के कारण उसे भय लगता था। वो कहती है कि बाबा जी आपको याद किया तथा आप आ गये तथा मुझे स्टेशन पर छोड़ कर आप गायब हो गये। तो क्या मैं गया था? नहीं। I am the incarnation of true Jnan. तुम लोगों को आजाद करके जाना चाहता हूँ ताकि मेरे बाद तुमको कोई बात पूछने दूसरे महात्मा के पास न जाना पड़े। मन के रूप को समझने के बाद व्यक्ति दूसरे द्वार से आगे जा सकता है अपितु नहीं। आगे शब्द और प्रकाश है। मैं वहाँ पहुँचता हूँ मगर प्रत्येक व्यक्ति वहां नहीं पहुँच सकता। क्यों? सांसारिक इच्छाएँ जो दिमाग पर पड़ी हुई है वो वहाँ तक पहुँचने नहीं देती। इसलिए एक तरीका है कि आगे जाने की प्रबल चाह रखो। दु:ख के समय तो सभी मालिक को या अपने इष्ट को याद करते है लेकिन सहायता उसकी होती है जो सुख में भी निष्काम भाव से

मालिक को याद करता है। प्रकृति स्वयं उसकी सहायता करती है। तुम्हारे विचार व विश्वास में बहुत शक्ति है। बशर्ते कि तुम सुमिरन और ध्यान ठीक ढंग से करो। विहँगम चाल क्या है ? अपने अनुभव से लाभ उठाओ तथा ऊपर चलते जाओ :-

मन में वेद को पढ़ कर, ब्रह्मा शंकर करते योग।
मन ही अन्तर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग॥
मन गोविन्द मन गोरख रूपा, मन ही योग वियोग।
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग॥
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग।
मन ही का व्यवहार जगत् में, नाहिँ जानें लोग॥

अपने अनुभव से लाभ उठाते हुए, अनेकवाद, त्रिपुटीवाद, द्वैतवाद और अद्वैतवाद में से अपनी सुरत को गुजारते हुए प्रकाश और शब्द में ले जाओ, वो तुम्हारा अपना रूप है :-

सन्त जन मारग विहँग बतावे।
कौन घर से जीव की उत्पत्ति, कौन घर को जावे॥

जीव कहाँ से आया ? मैंने क्या समझा ? हमारे शरीर में चार चीज़ें हैं, शारीरिक, मानसिक, आत्मिक बोधभान और चौथी वो वस्तु है जो इन सब में रहती हुई इन सब की साक्षी है। वो क्या है ? वो मैं हूँ, वो सुरत है। ऊपर के लोकों से भी ऊपर वो एक तत्त्व है। उसमें गति होती है, प्रकाश, शब्द और चेतनता पैदा हो जाती है तथा वो चेतनता मैं हूँ। वही सुरत शब्द में आती है तथा फिर वो ही प्रकाश में आती है। नीचे आकर मन में आ जाती है तथा फिर वही शरीर में आ जाती है।

इसी प्रकार नीचे से ऊपर की ओर चलते हुए अपने निज घर में पहुँचना बिहँगम है :-

कहाँ जाये जीव प्रलय होये सो सुरत बिना चढ़ाये।

यदि शरीर छोड़ने के समय मुझे होश रही तो कहाँ जाऊँगा? जात में गुम हो जाऊँगा। यदि व्यक्ति को यह ज्ञान हो जाये कि समुद्र में ज्वारभाटा आया, लहरें बनीं, छींटे बने और जब बुलबुला टूटा तो फिर समुद्र में मिल गया तो फिर उस व्यक्ति को शान्ति ही शान्ति है। ज्ञान की अग्नि से भ्रम दूर हो जाते हैं तथा फिर जहाँ से हम आये थे वहीं पहुँच जाते हैं। कई व्यक्ति यह प्रश्न करते हैं कि दुनिया की तो मोक्ष हो रही है फिर आबादी क्यों बढ़ रही है? यह रचना अनादि है। कभी ज्वारभाटा ज्यादा आ जाता है तो रचना भी ज्यादा हो जाती है।

मुझे ज्ञान हो गया इसलिए मैं अब बहुत सुखी हूँ। मगर यह ज्ञान कब आयेगा? जब तुम अपने अनुभव से लाभ उठाकर विहँगम मार्ग पर चलोगे :-

गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सूई नखा से जावे।
भू मण्डल से परिचय कर ले, पर्वत धूल लखावे॥

सूई का नाका क्या है? जब तुम जागते हो और सोने के लिए जाते हो तो जाग्रत अवस्था को भूल कर और एक बारीक अवस्था से निकल कर स्वप्न में चले जाते हो। उस अवस्था का नाम सूई का नाका है। यह तो बाहरी अवस्था है तथा अन्दर में मन के सम्पूर्ण ख्यालात और खेलों को छोड़ने के बाद जो एकतावाद की अवस्था आती है उसे सूई का नाका कहते हैं। जब इस अवस्था से निकल कर ऊपर चले

जाओगे तो मन का सम्बन्ध समाप्त हो जायेगा। भूमण्डल से परिचय करने का क्या अर्थ है? जब तक तुमको मन के रूप की समझ नहीं आयेगी तुम आगे नहीं जा सकते :-

द्वादश कोस साहिब का डेरा, तहाँ सुरत ठहराये।

यह 12 कोस क्या है? मैं यह समझता हूँ कि 6 चक्कर शरीर के और 6 चक्कर मन के जब छोड़ जाते हैं तो उसके बाद अपने रूप की समझ आती है। सन्तों ने अपनी वाणियाँ लिखी हैं कि लोग उनकी वाणियाँ पढ़ कर उनके पीछे फिरें। पिछला समय गया और अब और समय आ गया है :-

ताके रंग रूप नहीं रेखा, कौन पुरुष गुण गावे।

सूई के नाके से गुजर जाने के बाद तुम्हारी आद अवस्था, अकह, अपार, अगाध और अनाम आ जायेगी। वही हमारा आद घर है। हम वहाँ से आये हैं तथा वहीं वापिस जाना है :-

कहे कबीर सुनो भाई साधो, यह पद लख पावे।
अमर लोक में झूले हिंडोला,सत्तगुरु शब्द सुनावे॥

पता नहीं कि कबीर साहिब का अमरलोक कौन है? मेरी समझ में वो यह आया है कि मेरी अपनी ही जात अमर लोक है। न वो मरती है न वो जन्मती है बल्कि सब का आधार है। इंजीनियर साहिब! आप मुझे गुरु मानते हैं। मैं अपनी जिम्मेवारी का अनुभव करता हूँ। आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जिस ज़ज्बे से आप आज तक चले हो अगर वो परमार्थी नहीं था लेकिन स्वार्थी था। उसमें सांसारिक चाह थी। अब आप चीफ इंजीनियर बन जाओगे। साधन ज़रूर किया करो।

मन सहारा चाहता है। इसको गुरु स्वरूप का सहारा दो। जब तुम ऊपर चले जाओगे तो फिर प्रकाश और शब्द का सहारा दो। गुरुमुर्ति जो तुम्हारे अन्दर प्रकट होती है उसको बाबा फकीर नहीं बल्कि उसको पूर्ण समझो, उसको परमतत्त्व मानो वरना तुम मंजिल पर नहीं जा सकोगे।

अब सांसारिक बातें सुनो! तुम्हारे विचार में बहुत शक्ति है इसलिए अपने ख्याल को ऊँचा व आशावादी रखो। नफरत व द्वेष से परहेज करो। अपने स्वार्थ के लिए किसी को तंग मत करो। आप अफसर हैं। यदि किसी ने आपकी शान में कुछ कह दिया तो उसके लिए अपने मन में बदला लेने का ज़ज़्बा मत रखो। लेकिन यदि कोई महकमा गलती करता है तो उसे जरूर सजा देनी पड़ेगी वरना तुम अपनी ड्यूटी पूरी नहीं करते।

हजरत अली ने अपने दुश्मन को लड़ाई के समय नीचे गिरा लिया तथा उसकी छाती पर चढ़ बैठे। दुश्मन ने उनके मुँह पर थूक दिया। हजरत अली ने उसको छोड़ दिया। जब दुश्मन उठा तो कहने लगा कि काबू में आये दुश्मन को छोड़ देना कौन सी अकलमन्दी है। उन्होंने जवाब दिया कि पहले तो मेरी तेरे साथ असूल की लड़ाई थी अब क्योंकि तुमने मेरे मुँह पर थूक कर मेरी जाती बेइज्जती की है तथा जाती बेइज्जती का मेरे धर्म में बदला नहीं लिया जाता इसलिए मैंने तुमको छोड़ दिया। और सुनो एक मस्जिद में एक जोड़ा बुरी दृष्टि से गया। लोगों ने उनके बुरे खेल को देखा तो हजरत मुहम्मद साहिब को बता दिया। उन्होंने हजरत अली को आज्ञा दी कि उनको पकड़ कर लाओ। वो गये और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध ली और हाथ में डंडा

लेकर मस्जिद में चले गये। इधर-उधर घूम कर वापिस आ गये तथा प्रार्थना की कि वो नहीं मिले। लोगों ने कहा-यह अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे हुए थे। वो इन्हें देख कर चुपके से चले गये तथा इनको पता नहीं चला। हजरत मुहम्मद ने उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि आपकी आज्ञा है कि किसी के दोष मत देखना।

इसलिए किसी नियम पर चलो तथा आशावादी रहो। मालिक से यह मत माँगो कि हमें यह चाहिए बल्कि उससे प्रेम माँगो। तुम अपनी ओर देखो। तुम्हारा एक नौकर तुम्हारी प्रेम से सेवा करता है तो तुम स्वयं ही उसकी आवश्यकताओं को पूरा करोगे।

महमूद गजनवी ने जब दिल्ली में लूट मचाई तो उसके सभी व्यक्तियों ने लूट से काफी धन इकट्ठा किया। मगर उसका एक गुलाम नहीं गया। बादशाह ने कहा कि तुम क्यों नहीं गये? उसने कहा कि मेरी खुशी तो उसकी खुशी में हैं। मैं धन को क्या करूँगा। इस पर बादशाह बहुत खुश हुआ तथा उसे वजीर बना दिया।

तुम औरतें भी पति की निष्काम सेवा किया करो। जब तक पति जवान है तब तक तो तुम सेवा करोगी ही लेकिन असली सेवा है जो बुढ़ापे के समय की जाती है। ऐसे ही व्यक्ति को भी चाहिए। एक व्यक्ति की लाखों की जायदाद है। यदि उसके लड़के उसकी सेवा करते हैं तो इसलिए कि उसकी जायदाद उनको मिलेगी। असली सेवा वो है जो एक निर्धन और गरीब बाप की की जाये। अपने स्वार्थ के लिए तो सभी सेवा करते हैं इसलिए तुमको क्या करना चाहिए यदि तुम्हारी नीयत साफ है तो तुमको तुम्हारी गलती का पाप नहीं लगेगा। प्रश्न केवल नीयत का है। मैंने सारा जीवन अपने गृहस्थ जीवन में,

शिष्यपने में या गुरुपने में अपनी नीयत को साफ रखा है। तुम देखो कि अफीम हानिकारक है मगर बच्चे की बेहतरी या सुलाने के लिए मां बच्चे को अफीम दे देती हैं।

इंजीनियर साहिब! मैं सच्चे दिल से यह चाहता हूँ कि आप सब को सबसे पहले खाने को रोटी, पहनने को कपड़ा, रहने को मकान तथा मन को शान्ति मिले। रह गया निर्वाण! इसके अधिकारी बहुत कम हैं। जब तक अन्त समय तक शब्द नहीं आयेगा आवागमन समाप्त नहीं होगा। मैं हैरान होता हूँ कि गुरुओं ने लोगों को नाम देकर क्या किया? स्वयं तो डेरे बना लिये लेकिन हमको क्या मत दी? किसी ने सच्चाई नहीं बताई कि कोई किसी के अन्दर नहीं होता। मैंने क्यों सच्चाई बताई, सुनो! प्रेम से रामायण पढ़ते हैं तथा आनन्द लेते हैं तथा यह समझते हैं कि ग्रन्थों के पढ़ने से हमारे दुःख दूर हो जायेंगे लेकिन गोसाईं तुसलीदास जी जिन्होंने रामायण लिखी है उनको रामायण से कितना प्रेम होगा, लेकिन अन्तिम अवस्था में उनकी क्या हालत हुई? कितना कष्ट होगा। वो अपने सेवकों तथा मिलने वालों से कहते थे कि अब न तो हनुमान सहायता करते हैं न राम। जिस राम या जिस हनुमान का रूप उनके अन्दर आता था वो तो उनका अपना ही मन था। तुलसीदास जी उसी में फँसे रहे। इसलिए जब तक मन के रूप की समझ नहीं आती तथा गुरु-ज्ञान नहीं मिलता आवागमन से छुटकारा मुश्किल है।

सब को राधास्वामी!

ooooo

शोक संदेश

दुःखी हृदय से सूचित किया जाता है कि परमदयाल पं. फ़कीरचन्द जी महाराज के वरिष्ठ सत्संगियों में से श्री रामचन्द्र सनेजा जी मोदीनगर निवासी (सिरसा वाले) 15.4.2018 को अपनी 92 वर्ष की जीवन-यात्रा पूरी करके प्रभु चरणों में विलीन हो गए। श्री सनेजा जी मानवता मन्दिर के बनने से पहले से ही परमदयाल जी महाराज से जुड़े हुए थे। वे अभी वैसाखी महोत्सव पर मानवता मन्दिर में आए तथा दो दिन रहने के बाद 13.4.2018 (रात को) वापिस अपने घर चले गए। उनके पुत्र श्री चमनलाल सनेजा ने बताया कि रोजमर्रा की तरह 15.4.2018 को सुबह 5 से 6 बजे तक टेप-रिकार्ड पर बाबा जी के शब्द सुनकर श्री रामचन्द्र सनेजा जी ज़मीन पर लेट गए और अपने प्राण त्याग दिए। उनको कोई भी किसी तरह की बीमारी नहीं थी।

श्री रामचन्द्र सनेजा जी बहुत मृदु भाषी, शान्तिप्रिय प्रेमी सत्संगी तथा बाबा जी के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। शायद यही कारण है कि उनका अन्त समय बिना किसी दुःख तथा बीमारी रहित आया।

मानवता-मन्दिर परिवार श्री रामचन्द्र सनेजा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमदयाल जी महाराज के चरणों में विनती करता है कि बिछड़ी हुआ आत्मा को अपने चरणों में वास दें तथा दुखित परिवार व सगे-सम्बन्धियों को यह दुख सहने का बल बक्शें।

-राणा रणबीर सिंह
सचिव

विश्वास से भक्ति

सत्संग परमसन्त

हजूर मानवदयाल जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर (9.7.1982)

कहूँ उस देश की बतियां,
जहाँ नहिं होत दिन रतियाँ।
नहीं रविचन्द्र नहिं तारा,
नहीं उजियारा अन्धियारा।
नहीं वहाँ पवन नहिं पानी,
गये वहि देस ति जानी।
जहाँ वहाँ धरनि आकाशा,
करे कोई सन्त वहाँ वासा।
वहाँ गम काल की नाहीं,
वहाँ नहिं धूप नहिं छाहीं।
न योगी जोग से ध्यावे,
न तपसी देह जरवावे।
सहज में ध्यान से पावे,
सुरति का खेल जेहि आवे।
सोहंगम नाद नहिं भाई,

न बाजे शंख सहनाई।
निरच्छर जाप तहं जापै,
उठत धुन सुन्न से आपे।
मन्दिर में दीप बहु बारी,
नयन बिनु भई अन्धियारी।
कबीरा देश है न्यारा,
लखे कोई नाम का प्यारा॥

महर्षि शिवब्रत लालम्
सद्गुरुम् परमेश्वरम्।
वन्दे श्री दाता दयालम्
सर्वेशाम परमं गुरुम्॥
परम तत्वस्य अवतारम्
परम पूज्यम् सत्संगिनाम्।
मानवस्य परम इष्टम्
फकीरं वन्दे जगद्गुरुम्॥

राधास्वामी!

मेरी आत्मा के स्वरूप, साक्षात् सद्गुरु रूप, प्यारे सत्संगी भाइयों और बहनों,

आज के मासिक सत्संग के अवसर पर जो शब्द पढ़ा गया है वह हमारा ध्यान एक विशेष तथ्य की ओर आकर्षित करता है। वह

विशेष तथ्य यह है कि जिस अन्तिम लक्ष्य पर तत्त्व सर्वाधार को हम ढूँढने चले हैं, जिसे हमने परम तत्वावतार कहा है-

परम तत्वस्य अवतारम्,

परम पूज्य सत्संगिनाम्।

मानवस्य परम इष्टम्,

फकीरम् वन्दे जगद्गुरुम्॥

मानव का अर्थ लोग समझते नहीं है। लोग तो यही समझते हैं कि आमतौर पर जो कोई अच्छा काम करता है, कोई धर्मशाला या स्कूल खोल देता है या कुछ अच्छी बातें बताता है तो वह मानव है। अगर इससे विपरित उसका ध्यान बुरी बातों की तरफ जाता है, तो वह दानव है। लेकिन यहाँ 'मानव' शब्द का यह भाव नहीं है। संस्कृत भाषा में यह विशेषता है कि जिस शब्द का उच्चारण किया जाता है, उस शब्द के अन्दर ही उसका अर्थ मौजूद होता है। 'मानव' शब्द 'मनु' तत्त्व से निकला है। मनु ने ही स्मृति लिखी। हिन्दू लोग कहते हैं कि हम मनु को मानते हैं। लेकिन मनु ने जो ज्ञान, जो शिक्षा हमें दी है, उस पर कोई भी अमल नहीं करता। मनु तत्त्व है उसका आधार। भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को कहा- मैंने वह सुरत-शब्द-योग- जो सन्त मत का सार है- सबसे पहले विवस्वान (सूर्य) को दिया था। सूर्य ने वह सार तत्त्व का ज्ञान अपने पुत्र मनु को दिया। मनु ने इक्ष्वाकु को दिया और राज ऋषियों को वह तत्त्व भेद बताया। लेकिन काल इक्ष्वाकु ने अनेक के व्यतीत होने पर वह तत्त्व ज्ञान लुप्त हो गया। लेकिन, हे अर्जुन तुम्हारे प्रेम भक्ति से प्रभावित होकर वही लुप्त हुआ तत्त्व-ज्ञान आज

मैंने तुम्हें दिया है। क्योंकि तू मेरा भक्त है और मेरा प्यारा है। क्योंकि जिसे प्यार करते हैं, उससे दुराव या भेद नहीं रखते हैं प्रेम में कोई नियम नहीं है। प्रेम अपना नियम आप ही है। इसलिए जो प्यारा होता है, उससे झूठ नहीं बोला जा सकता।

साँच कहूं तो कोई न माने,

झूठ कहा नहिं जाई हो।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया,

जिन यह राह चलाई हो।

अवधू दुखिया भूपति दुखिया,

रंक दुःखी विपरीती हो।

कहे कबीर सकल जग दुखिया,

सन्त सुखी मन जीती हो।

वह भेद है- मन को जीतना । लेकिन मन को जीतना बहुत ही कठिन है और बहुत ही सरल भी है। आप जब मन को जीतने के लिए प्रयत्न करते हैं, जैसा कि इस शब्द में था जो साधना ने पढ़ा है- मन को जीतने के लिए अनेक यत्न करने पड़ने हैं, अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन एक बार जिसने मन को सद्गुरु के समर्पित कर दिया, तो फिर उसे कोई यत्न, मुसीबत या कठिनाई नहीं सहनी पडती। किसी भी व्यक्ति के मन का तार जब मालिक से मिल जाता है और वह मालिक के प्रेम में ओत-प्रोत हो जाता है, तो उस पर एक अवस्था तारी हो जाती है,

जहाँ न दास रहता है, न मालिक रहता है, न गुरु रहता है, न शिष्य रहता है। केवल एक सत्ता- एक हैपने की अवस्था रह जाती है। वह अवस्था ही परम अवस्था- असली अवस्था है। उसी अवस्था को प्राप्त करने के लिए-

कोटि कोटि मुनि यतन कराहीं।

अन्त राम कह आवत नाहीं॥ (तुलसीदास)

लेकिन जिसने प्रेम से अपने-आपको प्रियतम के समर्पित कर दिया उसे कोई कठिनाई नहीं होती और मालिक साक्षात् उसको अपने अंग लगा लेते हैं। उन्हीं की दया से हमें किसी तरह की रुकावट नहीं होगी। लोग कहते हैं कि हम मालिक को मिलने चले हैं? वह मालिक कौन है जिसे मिलने चले हो तुम? वह मालिक न तो ईंट-पत्थर हैं, न वह पेड़-पौधा है, न वह कोई जानवर ही है। वह तो मनुष्यों के अन्दर चेतन स्वरूप है और सन्त में वह आत्म-चेतना होकर रहता है। वह परम तत्त्व सर्वाधार सर्वव्यापक है। अगर आप एक बार उसके चरण को पकड़ लोगे तो आपके रास्ते में किसी प्रकार की रुकावट नहीं हो सकती।

एक स्त्री थी। उसने अपने जीवन में कोई शुभ कार्य नहीं किया था। केवल एक बार उसने एक गाय को गाजर खिलाया था। मरने के बाद जब वह धर्मराज के दरबार में गई तो धर्मराज ने उसे कहा- 'भाई, यद्यपि तूने कोई धर्म का काम तो नहीं किया है, तथापि तूने एक बार एक गाय को गाजर खिलाया था। इसी शुभ कर्म के प्रताप से तुझे कुछ काल के लिए स्वर्ग भेजा जाता है।' वह बुढिया उस गाजर के सहारे

स्वर्ग की ओर उड़ चली। नीचे उस बुढ़िया का पांव पकड़े कई आदमियों की शृंखला उसके सहारे स्वर्ग की ओर उड़ चले। बुढ़िया की दृष्टि जब नीचे की तरफ गई और पैर लटके हुए आदमियों की कतार देखी तो वह चिल्ला पड़ी- 'यह गाजर तो मेरी है'। ज्योंहि उसके मन में 'मोर-तोर' का भाव आया, वह बुढ़िया नीचे को गिरी और उसके साथ ही उसका पांव पकड़े हुए सारे लोग भी नीचे को गिर पड़े। और कोई भी स्वर्ग को नहीं पहुँचा। तो अगर आपको निज धाम जाना है, उसके लिए कौन-सा उपाय है? एक ही उपाय है-

पकड़ चरन तू निज घर जावे,

काल करम कमाल री।

कोई कदर न जाने,

सतगुरु परमदयाल री॥

यह दाता दयाल जी महाराज ने परमदयाल जी महाराज को सम्बोधित करके लिखा है और उन्हीं को यह 'परमदयाल' का नाम बख्शा था। दु:ख की बात है कि परमदयाल जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद सभी परमदयाल बन गए। यह बहुत गलत है। तो-

सत्गुरु परमदयाल री कोई कदर न जाने।

सद्गुरु तो हैं ही परमदयाल। मगर दु:ख की बात तो यह है कि जो कुछ परमदयाल सद्गुरु जीवों को देना चाहते हैं, उसको लेने वाले कोई नहीं है। परमदयाल जी महाराज ने कई बार कहा- 'मैंने खोटे कर्म किए ये जो मुझे यह सयापा पीटना पड़ा। मैंने गुरु का काम तो किया लेकिन गुरु नहीं बना। असली गुरु तो मालिक ही हैं। वे सब के अन्तर

में है। यदि आप अपने आपको उसके सुपुर्द कर दें तो कोई और दूसरा काम निज धाम जाने के लिए नहीं करना पड़ेगा। क्योंकि सद्‌गुरु तो परमदयाल होता है। दयाल तो वह है जो किसी की प्रार्थना पर दया करता है। लेकिन परमदयाल वह है जो बिना किसी के मांगे, बिना किसी एवज के ही सब पर दया करता है। परमदयाल जी महाराज ने इस बात को बड़े स्पष्ट और आसान भाषा में समझाया है। अब लोग कहते हैं कि गुरु कुछ नहीं करता। लोगों का अपना ही विश्वास और प्रेम होता है, जो काम बन जाता है। लेकिन परमदयाल जी महाराज ने स्वयं मुझे समझाया था कि यदि मैं सत्संगियों के साथ ऐसा करूँगा तो उसका नतीजा यह होगा, और यदि वैसा करुँगा तो उसका नतीजा बिल्कुल दूसरा होगा। इससे यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है कि सद्‌गुरु के दया करने के खास-खास तरीके होते हैं जिनको अपनाकर वह सत्संगियों का भला करता है। गुरु तो संसार में अनेक होते हैं, मगर सद्‌गुरु कोई एक होता है। सद्‌गुरु वह है जो सत् में ठहरा हुआ होता है। इस मिथ्या जगत् में रहते हुए भी वह सत् में रहता है। सद्‌गुरु का कभी विनाश नहीं होता, ना ही वह जन्मता और मरता है और ना ही उसके भक्त का कभी नाश होता है। गुरु-भक्त हमेशा अमर रहता है-

परित्राणाय साधुनां,

विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थाय

सम्भवामि युगे युगे॥

साधुओं की रक्षा के लिए और दुष्टों के विनाश के लिए मैं हर

एक युग में अवतार लेता हूँ। इतना ही नहीं बल्कि आगे चलकर भगवान ने कहा है-

अभिचेत्सु दुराचारी,

भजते मामनन्यभाक्।

साधुरेव स मन्तव्यः,

सम्यग्व्यवसितो हि सः॥

अर्थात् वह एक क्षणमात्र में धर्मात्मा हो जाता है और परम शान्ति को प्राप्त होता है।

कौन्तेय प्रति जानीहि,

न मे भक्ताः प्रणश्यति।

हे अर्जुन! तू अपने मन में धारण कर ले कि मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता और उसका लोक-परलोक दोनों ही बन जाते हैं।

उन्होंने कई मिसालें दी हैं। एक बार पार्वती माता ने भगवान् शिव से कहा कि महाराज! आप मुझे जरा अपने भक्तों का दर्शन तो कराईये! आपके भक्तों के दर्शन से ही मुक्ति मिल जाती है। शिव पार्वती भिखारी के भेष में पृथ्वी लोक में आए। काशी नगरी में एक बड़ा सेठ अपनी हवेली के बाहर बैठा था। कई मुनीम, नौकर-चाकर काम में लगे हुए थे। पानी से भरे हुए मटके एक तरफ रखे हुए थे। भिखारी के भेष में शिवजी ने सेठ से कहा- 'मुझे प्यास लगी है, पानी पिला दो।' सेठ ने समझा कोई चोर उच्चका है और बोला, 'भाग जाओ यहाँ से। यहाँ पानी नहीं मिलता'। चलते -चलते शिवजी ने कहा-

'अच्छा सेठ, तू फले फूले'। कुछ दूर आगे गए तो एक कुटी के सामने एक साधु बैठा था और 'शिव-शिव' जप रहा था। शिव पार्वती वहाँ पहुँचे तो शिवजी बोले-'भक्त पानी पिला दो। बड़ी प्यास लगी है।' साधु ने उन्हें बड़े सत्कार सहित बिठाया और अपनी छोटी सी एक गाय को दोहन कर दो गिलास ताजा दूध उन्हें पिलाया। दूध पी कर जब शिवजी चलने लगे तो बोले-'तेरी गाय मर जाए'। पार्वती जी बोली- 'भगवान्! यह सब आपकी क्या लीला है? जिस दुष्ट ने आपको अपमानित किया उसे तो आपने समृद्ध होने का वरदान दिया, और जिसने आपको सम्मान सहित दूध पिलाया, उसे उसकी गाय मर जाने का अभिशाप दे डाला। यह सब क्या रहस्य है?' शिवजी बोले- 'पार्वती, बात यह है जिस सेठ ने मुझे गाली दी, उसका मन अभी सांसारिकता में फँसा हुआ है। उसे मेरी भक्ति नहीं चाहिए। इसलिए वह और माया में फंसेगा, तब उसे समझ आयेगी। लेकिन यह भक्त तो मोह-माया सर्वस्व त्याग चुका है। बस केवल एक गाय है जिसमें उसका मन अटका हुआ है। गाय मरी नहीं कि वह मेरे धाम को आ जाएगा।'

इस प्रकार मुक्ति का रास्ता तो आसान और सहज है। पर लोग इस सहज राह पर चलना नहीं चाहते। लोगों को तो ऐसा गुरु पसन्द है जो उन्हें कठिन कर्म-काण्ड में उलझाकर उन्हें अच्छी तरह मूड़ ले। सच्चाई के ग्राहक संसार में बहुत कम हैं।

सांच कहूं तो कोई न माने,
झूठ कहा नहिं जाई हो।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दुखिया,
जिन यह राह चलाई हो।

आज जमाना ही ऐसा है कि असलियत के चाहने वाले कमतर है और जब तक असलियत की चाह नहीं पैदा होती, तब तक मनुष्य चाहे जितनी कोशिशें कर ले, अभ्यास कर ले, प्रकाश देख ले और सारे शब्द सुन ले। लेकिन इन सबके बावजूद भी उसे मुक्ति नहीं मिल सकती! नहीं मिल सकती! नहीं मिल सकती! जब तक आपका मन शुद्ध-साफ नहीं होता, तब तक साधन अभ्यास का कोई फायदा नहीं हो सकता। यही आज के शब्द का सार है, यही असलियत है कि आप पहले अपने मन को स्थिर करो, मन को ठहराओ और यही है सहज मार्ग, सरल युक्त। अपने-आपको अपने आप में ठहराओ। श्री भगवान कृष्ण जी ने अर्जुन को यही उपदेश दिया-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरण आ।
अहं त्वां सर्वपपिभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

'हे अर्जुन, तू सारे कर्मों को त्याग कर केवल मेरी शरण में आजा। मैं तुम्हें सारे पापों से मुक्त कर दूंगा। तू किसी प्रकार की चिन्ता मत कर'। इतनी पूरी तरह गारण्टी देने के बावजूद भी लोग कभी शक्ति की पूजा, कभी देवी की पूजा, कभी लक्ष्मी की पूजा करते रहते है। हजारों-लाखों रूपए खर्च करके जागरण करते रहते है। ऐसे जागरण से क्या लाभ जो आपकी असलियत की तरफ से आँखें बन्द कर दे। सच्चा जागरण तो वह है जो आपको अन्दर से जगा दे। असली जागरण तो आपके अन्दर है। अगर अन्दर का जागरण हो जाए तो दुनिया की

कोई ताकत आपके रास्ते में रुकावट नहीं डाल सकती। यही अध्यात्म का सार तत्व है जिसको समझाने के लिए परमदयाल जी महाराज ने यह मानवता मन्दिर का सच्चा डेरा चलाया ताकि इस एक स्थान पर बैठकर लोगों को सच्ची शान्ति और कल्याण के मार्ग का सच्चा ज्ञान मिले। परमदयाल जी महाराज के इस सच्चे डेरे में बैठकर आज भी लोगों को सच्ची शान्ति मिलती है। मैं अपने गुरु की कोई गुड्डी नहीं चढ़ा रहा। उनकी गुड्डी तो पहले से ही चढ़ी हुई है और जगत् विख्यात है। दो वर्ष पूर्व अमरीका से कोई पच्चीस अमरीकी यहां आये थे। सत्संग के बाद उन्हें परमदयाल जी महाराज के उस छोटे से कमरे में बिठाया। तो उन सबकी गहरी समाधि लग गई जब उनके जाने का समय हुआ और सबको डीलक्स बस में बैठाया गया तो उनमें से एक आदमी कम था। सबतो चिन्ता हुई कि उनका एक साथी कहाँ है ? जब खोज मची तो वह अमरीकी परमदयाल जी महाराज के उसी कमरे में ही गहरी समाधि की अवस्था में बैठा था। जब उसे उठाया गया तो वह कहने लगा–'मुझे तो यही रहना है'। वह वहाँ से उठने को तैयार ही नहीं था।

यदि आप मेरे इन शब्दों को समझ लो और अपनी सारी चिन्ताएं–फिक्र मुझे समर्पित कर दो तो आपकी सारी बाधायें अपने आप दूर हो जायेंगी और आपको सब कुछ प्राप्त हो जाएगा। अगर आप मालिक पर विश्वास रखते हों और–

यो मां पश्यति सर्वत्र, सर्व च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि, स च मे न प्रणशति॥

जो मुझे सब जगह देखता है और सबको मेरे में देखता है, उससे मैं कभी अलग नहीं होता और वह मेरे से कभी अलग नहीं होता। कोई हर्ज नहीं अगर आप देवी–देवताओं के मन्दिर में जाते हो, मगर आपकी दृष्टि ऐसी होनी चाहिए कि आपको सिवा अपने इष्ट देव के और कोई दूसरा दिखे ही नहीं।

यह अपना नारायण दास बैठा है, जो अपना कोयले का व्यापार करता था। इसकी आढ़त पर इन्स्पेक्टर आया और रिश्वत माँगी। नारायण दास ने कहा– 'मैं रिश्वत नहीं देता'। इन्स्पेक्टर ने नारायण दास पर झूठा मुकद्दमा दायर कर दिया। अदालत में अर्जी दे दी कि नारायण दास मुझे रिश्वत देकर गलत काम कराना चाहता है। नारायणदास जब समन आने पर अदालत गया तो उन्होंने क्या देखा कि मजिस्ट्रेट की जगह परमदयाल जी महाराज बैठे हैं और परमदयाल जी महाराज ही वकील के रूप में जिरह कर रहे हैं। वकील ने इनसे कुछ जिरह करना चाहा तो मजिस्ट्रेट ने उसे रोक दिया और स्वयं ही नारायण दास से सीधा प्रश्न पूछने लगा–'नारायणदास, क्या मजिस्ट्रेट ने तुम से रिश्वत माँगी थी'। नारायणदास हक्का–बक्का होकर खड़ा रहा। मजिस्ट्रेट ने स्वयं सारा बयान नारायण दास के हक में लिखकर उन्हें मुकद्दमें से बरी कर दिया।

तो आपको कुछ और नहीं करना है। केवल अपने–आपको सद्गुरु के समर्पण कर दे। मुश्किल तो यह है कि आप अपने को सद्गुरु के समर्पण करते ही नहीं। आप अपनी चिन्ता और मुसीबतें भी सद्गुरु को नहीं देते। लोग मुसीबतों को भी छोड़ना नहीं चाहते,

बल्कि उसमें ही एक तरह का स्वाद लेते हैं। जब तक आप अपने आपे को पूरी तरह जीवित सद्‌गुरु वक्त के समर्पण नहीं कर दोगे, तब तक आपका कोई काम बनने वाला नहीं है। परम दयाल जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि आप खुले दिल से यहां आओ और सच्ची बात को सुनो–समझो और गुनो। अगर आपको मेरी बात में कोई गलती दिखाई दे तो मुझ को बताओ। लेकिन परमदयाल जी महाराज की शिक्षा में, उनके उपदेश के वचनों में कोई न गलती है और न हो सकती है। यदि आप सच्चाई से इस सच्चे रास्ते पर चलोगे तो आप भी गल्ती से बच जाओगे और आपका लोक–परलोक दोनों सफल होंगे।

मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आपका शरीर स्वस्थ रहे, आपका मन चिन्ता रहित रहे, आपकी आत्मा आनन्दित रहे और आपकी सुरत परमानन्द को प्राप्त हो।

इन शब्दों के साथ मैं आज का सत्संग समाप्त करता हूँ।

॥ सबको राधास्वामी ॥

सत्संग

परमसन्त हजूर
दयाल कमल जी महाराज

मानवता मन्दिर, हनमकौण्डा (22.1.2018)

मंगलमय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले।
भव दुख सकल मिटाय, शान्त पद देने वाले॥
भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं सूझे कोई।
शब्द जहाज चढ़ाय, पार गुरु कीन्हा सोई॥
बूझत रहे मँझधार, मिला नहीं कोई सहाई।
आये गुरु दातार, बाँह गह मेरी ठौर लगाई॥
नाम रूप का भेद दिया, भरम भेद मिटाया।
पद अभेद दरसाय, भेद का फन्द छुड़ाया॥
राधास्वामी पद कमल, मन मधुप लुभाना।
मन बानी के परे, मिला धुर पद निरवाना॥

राधास्वामी,

आज सुबह 10 बजे मुझे खबर मिली नारायण सिंह के भतीजा राजकुमार ठाकुर, जो दिल्ली में बहुत ऊँचे पद पर हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमति कृष्णा देवी ने आज रात साढ़े बारह बजे अपना शरीर त्याग दिया। मैं सभी सत्संगियों से प्रार्थना करता हूँ। उनकी याद में उनकी

आत्मा के लिए, उनकी सुरत के लिए एक मिनट मौन रहकर सत्गुरु दाता दयाल जी महाराज के श्री चरणों में, सत्गुरु परमदयाल जी महाराज के श्री चरणों में और जिसको भी आप मानते हैं उनके श्री चरणों में उनकी आत्मा की सुख-शान्ति और उनके अपने घर जाने की विनती करेंगे।

यह जो संसार है जिसको जगत कहते हैं, दुनिया कहते हैं- यह एक शक्ति ने बनाया है और उसने उस जगत के लिए एक नियम बना दिया- जो उपजे सो बिनसे (जो पैदा हुआ वो समाप्त होगा) इस सृष्टि में कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसका अन्त नहीं है। चाहे कोई संत है, चाहे कोई परमसंत है, चाहे कोई चोर है, चाहे कोई डाकू है हम सबने एक दिन जाना है। वह समय निश्चित है, उस समय को कोई टाल नहीं सकता। अब सवाल यह है कि इससे बचने का इलाज क्या है? क्या हम मौत को टाल सकते हैं? नहीं, टाल सकते। यह तो एक तब्दीली है। दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द है- काल का हिंडोला है। हिंडोले का मतलब है ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर चलता है। यह संसार का हिंडोला है और कोई भी शरीर ऐसा नहीं रहेगा उसको एक दिन नाश होना है। नाश होकर जाना कहाँ है? जिन्दगी का मकसद क्या हुआ? क्या हम यहाँ खाने-पीने के लिए आए, पहनने के लिए आए, औलाद पैदा करने के लिए या शरीर के सुख लेने के लिए आए? नहीं यह हमारी जिन्दगी का मकसद नहीं है। हमारी जिन्दगी का मकसद या उद्देश्य तो कुछ ओर है। वह कुछ ओर इसलिए है कि कोई भी जीव-जन्तु जानवर इन्सान के चोले के बराबर नहीं है। इन्सान का शरीर एक ऐसा अद्‌भुत नमूना है जिसको मालिक ने अपने रूप में बनाया यह पूर्ण है। यह पूर्ण

कैसे है? यह पांच तत्त्व का बना हुआ है। इसमें पृथ्वी तत्त्व है, जल तत्त्व है, अग्नि तत्त्व है, वायु तत्त्व है और आकाश तत्त्व है। बाकि किसी जीव में पाँच तत्त्व नहीं है वृक्षों जड़ी-बूटियों में सिर्फ एक तत्त्व है। जल के जीव-जन्तुओं में केवल दो तत्त्व हैं, जल और अग्नि। उड़ने वाले पक्षियों में तीन तत्त्व हैं और जो पशु हैं चार पाँव वाले, उनमें चार तत्त्व हैं। इस मानव शरीर में पाँच तत्त्व हैं। इसलिए इसको नर-नारायणी देह कहा गया है इसके मुकाबले में कोई और जीव-जन्तु नहीं है। जब इसमें इतने गुण हैं तो क्या हमने उन गुणों का लाभ उठाया? क्या हमने कभी सोचा कि ये जीव-जन्तु भी बाल बच्चे पैदा करते हैं, खाते-पीते हैं और वो भी चले जाते हैं। हम भी वही काम करते हैं फिर हमारे में और जीव-जन्तुओं में क्या फर्क हुआ? फर्क यह है कि उनमें मन नहीं है, बुद्धि है। बेल में बुद्धि है वही बेल जो पेड़ पर चढ़ जाती है वह ऊपर चढ़ती जाती है। उसमें बुद्धि है कि उसने ऊपर जाना है। क्या आपने कभी देखा कि इन पाँचों तत्त्वों का बहाव किस तरफ को है? पृथ्वी में आप कोई भी चीज डाल दीजिए पृथ्वी उसको अपना अंग बना लेती है। अग्नि का रूप ऊपर को जाता है, अग्नि की लाट हमेशा ऊपर को जाती है क्योंकि वह ऊपर से आयी है। जल सागर से आया जैसे ही जमीन पर गिरता है वह भी दौड़ता है अपनी जगह को जाने के लिए। वायु भी जहाँ से आयी है वहाँ जाने के लिए दौड़ती है। जब हमारे शरीर का हर अंग अपने घर की तरफ भाग रहा है, तो क्या जो इस शरीर में बैठा है उसने भी कभी सोचा कि मेरा भी कोई घर है। जल अपनी तरफ को जा रहा है, वायु नी ओर दौड़ रही है, अग्नि अपने ऊपर तरफ की जा रही है पृथ्वी अपने रंग में मिला रही है। क्या आपकी आत्मा, आपकी सुरत ने सोचा है कि मैंने भी

कहीं जाना है।

किसी ने भी आज तक नहीं बताया कि हम कहाँ से आए हैं। कबीर साहिब कहते हैं– यहाँ से सब कोई जात हैं, भार लदाए–लदाए, वहाँ से कोई नहीं आत हैं का से पूछूँ याए। वहाँ से कोई आता ही नहीं है। आपका बच्चा कहीं जाता है आप फोन करते हैं बच्चा, तू पहुँच गया? अगर फोन नहीं आता है, तो तुम बैचेन हो जाते हो। मगर वहाँ से कोई टेलीफोन भी नहीं आता, कोई चिट्ठी नहीं आती। इसीलिए कबीर साहिब कहते हैं– यहाँ से सब कोई जात हैं भार लदाए–लदाए, वहाँ से कोई नहीं आता है का से पूँछूँ जाय। वहाँ से एक आया, कौन आया? वहाँ से सद्‌गुरु आया। उसकी बुद्धि और मत सुलझी हुई है वह भवसागर से पकड़कर अपने स्थान पहुँचा देते हैं। हमें पार लगाने वाला कौन है? सद्‌गुरु। वह सद्‌गुरु कौन है? जहाँ से हम आए? हम कहाँ से आए? प्रकाश और शब्द से आए। हमारी सुरत आत्मा प्रकाश से आयी है। जो प्रकाश में रहता है, जो सुरत में रहता है, जो मन में रहता है और जो शरीर में रहकर बोलता है वह सुरत रूप शब्द से आयी। **शब्दे धरती, शब्दे आकाश, शब्दो शब्द भया प्रकाश।** यह सारा कर्म प्रकाश का है और इसीलिए हिन्दुओं में, मुसलमानों में, ईसाईयों में, यहुदियों में, पारसियों में अग्नि की पूजा होती है। मुसलमान लुप कहते हैं, अंग्रेज लाईट कहते हैं, हम ज्योति कहते हैं। मरने के बाद जहाँ उनका चोला पड़ा होता है, वहाँ दीया जलाकर रखा जाता है। वह दीया क्यों जलाकर रखा जाता है ताकि जो सुरत रूप निकली है शरीर से, उसको बताया जाता है कि ओ, जाने वाली मेरी पत्नी, ओ जाने वाले मेरे बुर्जुगों तुम शरीर नहीं हो तुम ज्योति स्वरूप हो, यह शरीर तुम्हारा नहीं है। कृष्णा

जी भी सोते–सोते चली गई उनको कोई तकलीफ भी नहीं हुई। अगर वह गहरी नींद में गई है, तो उनका कल्याण हो गया। उनका जन्म नहीं होगा। अगर उन्होंने सपने की हालत में शरीर छोड़ा है। पति को देख रही है, किसी बच्चे को देख रही हैं या किसी और सगे सम्बन्धी को देख रही है, तो फिर वह किसी ब्रह्मांड में है, उनको वापिस आना पड़ेगा।

राधास्वामी क्या है? राधास्वामी का कोई अन्त ही नहीं है। गुरुनानक साहिब ने कहा– वह कहाँ है– लख आकाश आकाश, लख पाताला पाताल................. अरे! वहाँ जाने के लिए न जाने कितने आकाश हैं, न जाने कितने पाताल हैं इसके ऊपर न जाने कितने वेदों में, शास्त्रों में क्या कुछ लिखा है पर उसका लेखा किसी को भी नहीं पता। जो वहाँ गया उसी में गुम हो गया, आकर बताया नहीं कि मैं क्या हूँ। मेरे दाता सद्‌गुरु परमदयाल जी महाराज फरमाया करते थे– कि मैंने सबकुछ देखा पूर्ण रूप से ज्ञान प्राप्त कर लिया कि जीवन क्या है मैं चाहता हूँ कि मालिक मुझे ऐसी हस्ती दे कि शरीर छोड़ने के बाद दुनिया को बताऊँ कि मेरा क्या हाल हुआ, मैं कहाँ जा रहा हूँ। किसी ने मुझसे सवाल किया कि महाराज जी ऐसे बताया करते थे किन्तु कुछ बताया तो नहीं। मैंने कहा अरे! मुर्खों तुम कितने भोले हो, तुम कितने अज्ञानी हो सागर की बूँद सागर में चली गई, तो क्या बोलेगी। अगर सागर की बूंद ब्रह्मांड में है तो वापिस आयेगी। सूरज की किरण वापिस सूरज में चली गई। जब उनका आखिरी पत्र मानवता मन्दिर में आया। उन्होंने अपना चोला अमेरिका में छोड़ा। मैं होशियारपुर में था जब महाराज जी अमेरिका गए। उन्होंने फरमाया कि मैं जा रहा हूँ यह मेरा मानवता मन्दिर में अन्तिम सत्संग है। वहाँ से यह चोला लकड़ी के बाक्स में बन्द

होकर आयेगा। जो मेरे शरीर छोड़ने पर रोयेगा, वह मेरा भक्त नहीं होगा। क्योंकि जो मेरे शरीर के लिए रोयेगा वह मेरा शिष्य नहीं होगा। फिर वह स्थान बताया कि इस जगह पर मेरा संस्कार करके मेरी हड्डियों पर मानवता का झंडा लहराया जाये। अगर दुनिया में कोई धर्म है तो केवल मानवता है और कुछ भी नहीं है। उस जगह का नाम 'परमशान्ति स्थल' रखा है। जो वहाँ आकर बैठते हैं सारी दुनिया भूल जाते हैं।

ये जमीन, ये पृथ्वी खड़ी नहीं है, सूरज के चारों ओर चल रही है। यह सारा ब्रह्मांड घूम रहा है। पृथ्वी सूरज के चारों तरफ घूम रही है। चाँद पृथ्वी के चारों तरफ घूम रहा है। इस सूरज से एक और बड़ा सूरज है जो 711 करोड़ गुना सूरज से बड़ा है। कोई जान सकता है इस ब्रह्मांड को ? यह पृथ्वी भी अपनी लाईन पर चल रही है। हम किसी जगह पर पहुंचने के लिए स्टेशन से गाड़ी में बैठते हैं। कहीं जाने के लिए पहले टिकट लेते हैं और जहाँ वह टिकट खत्म हो गया वहाँ तुम्हें गाड़ी से उतरना पड़ेगा। ऐसे ही यह पृथ्वी एक गाड़ी है हम यहाँ टिकट लेकर आए हुए हैं। इस टिकट में किसी की सिफारिश नहीं चलेगी। सबको अपना स्थान आने पर उतरना पड़ेगा। वह टिकट क्या है ? हमारे कर्म। उस पर क्या लिखा है ? हमारे प्राण कितने हैं। जिस वक्त वो प्राण, कर्म, संस्कार खत्म हो गए, हम गाड़ी से उतर जाएँगें और आलोप हो जाएँगें। जैसे स्टेशन पर उतरे कोई टैक्सी में बैठ गया, कोई थ्री व्हीलर में बैठ गया। अगर सफर लम्बा चाहते हो तो इस शरीर से निकलने वाले साँस को देखो। तुम रोज कितने साँस जाया करते हो। ज्यादा खाने वाले के साँस बड़ी जल्दी निकलते हैं। जो कम खाते हैं भजन करते है, नाम जपते

हैं तो हमारा साँस बहुत धीमा होता है। अगर वह ठीक असूलों पर चलें तो उनका शरीर भी तन्दुरस्त रहता है और आयु भी लम्बी हो जाती है। लेकिन फिर भी सवाल यह है कि क्या मौत से बच सकते हैं ? नहीं, बच सकते कोई नहीं बच सकता। इसके ऊपर दाता दयाल जी का एक शब्द सुना देता हूँ– हम तैयार रहें। पंजाबियों में एक कहावत है– जब औरतें चरखा कातती हैं तो गाती हैं भरया चिरंजन छड़ जाना चिट्ठी आ गई। इसलिए दाता दयाल जी हमें जगाने आये हैं।

यह सत्संग मैं बहन कृष्ण देवी को समर्पित करता हूँ। हमारी जिन्दगी की अहमियत, हमारी जिन्दगी का मकसद क्या है ? यह शरीर तो एक घोड़ा है तुम्हारा नहीं है। तुम कह देते हो मेरा शरीर लेकिन इसका मतलब हुआ कि मैं और हूँ और मेरा शरीर और। अगर पाँव पर चोट लग गई तो बहुत कम लोग कहते हैं कि मेरे चोट लग गई। लोग कहते हैं कि मेरे पाँव पर चोट लग गई फिर पाँव और हो गया। यह एक घोड़ा है व्हीकल है चलने के लिए। यह पूर्ण है।

कोई यह कह दे कि दिल की धड़कन मेरे हाथ में है, मेरे शरीर की नब्ज मेरे हाथ में है। कोई कह दे कि मैं आँख से देख सकता हूँ, आँख से देखने वाला कोई और है। तुम्हारे कान में बैठा सुनने वाला कोई और है। तुम्हारी रसना पर तरह-तरह के स्वाद लेने वाला भी कोई और है। वो जो कोई और है वह तुम हो। आँख में देखने की ताकत नहीं है, कान में सुनने की ताकत नहीं है, न जुबान के रस को जानने की ताकत है। तुम वो हो जो आँख में बैठा देखता है, जो यह भेदभाव करता है कि यह मेरी पत्नी है, यह मेरी बेटी है, यह मेरा भाई है, यह मेरी चाचा है, यह मेरी माता है। आँख इसका भेदभाव नहीं करती, उसके लिए सब

बराबर हैं। जो इस आँख में बैठकर देखता है वह सब करता है। वह कौन है? उसको पहचानो। परमदयाल जी महाराज कहते हैं- **मेरी सद्‌गुरु पकड़ी बाँह नहीं तो मैं बह जाता।** बह जाता मतलब भटक जाता। उन्होंने भटकन खत्म कर दी बता दिया कि मेरा घर कौन सा है। मुझे कहाँ जाना है। वह स्थाई घर है, दुनिया में तो किराये पर आये हो। हम सब किराये पर हैं-

जो आते हैं, वह जाते हैं, जो गये लौट नहीं आते हैं।
मैं किससे पूछूँ पथिक राह में कैसे सुख दुख पाते हैं॥

दाता दयाल जी महाराज कहते हैं- मैं जाने वाले से कैसे पूछूँ कि कोई दुख-तकलीफ तो नहीं हुआ। उस रास्ते पर कोई पूछने वाला ही नहीं है।ज्यादा से ज्यादा तेरहवीं कर देंगे। साल के बाद फिर याद कर लेंगे किसी पण्डित को दान दक्षिणा दे देंगे लोगों को भोजन करा देंगे। मैंने एक बार पण्डित जी से पूछा कि हमारे वो पुरोहित कहाँ चले गए जो यह बतायें कि यह परम्परा क्यों रखी गई है। वह यह नहीं बता पायें, बस दान लिया और चले गए। चार साल बाद क्यों करते हैं- जमीन अपनी सुरत के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है। एक साल में एक चक्कर पूरा होता है। चार साल बाद जमीन उसी प्वाईंट पर आ जाती है, जहाँ पर चार साल पहले थी। वह आत्मा अगर किसी भी लोक में होगी। पितृ लोक है, रामलोक है, विष्णु लोक है, शिवलोक है, ब्रह्मालोक है, शान्ति लोक है, गुरु लोक है, अगम लोक है ऊपर करीब 14 लोक हैं। उन लोकों में कहीं भी वह आत्मा हो तो चार साल बाद उस जमीन के बिल्कुल सामने आ जाती है। उस वक्त अगर हम उस आत्मा के लिए कोई प्रार्थना करेंगे कि तुम इस ब्रह्मांड से निकल जाओ, पितृ लोक को छोड़ो, तो वह उस

आत्मा तक पहुँचेगी।

एक बार परमदयाल जी महाराज का माहवारी सत्संग खत्म हुआ तो वहाँ पर एक प्रौफेसर लुधियाना से आए हुए थे। वे रमण ऋषि की बात कर रहे थे। रमण ऋषि एक बहुत बड़े ऋषि हुए हैं। मैं भी उस समय प्रौफेसर था। मैंने भी उनकी बातों में दखल दे दिया कि ये बात ऐसे नहीं ऐसे है। परमदयाल जी महाराज ने उनकी तरफ नहीं देखा बल्कि मेरी तरफ देखा। महाराज जी बोले, बच्चा तू भी किताबें पढ़ता है। किताबें पढ़ने वाला आलम होता है आलम। लेकिन तू आमिल बन। आमिल मतलब प्रैक्टिकल, किताबों पर नहीं तू आमिल बन। अपने जीवन को अमली बना। मैंने शिव पुराण में पढ़ा जो भी जिस देवी-देवता की पूजा करेगा, उसी के लोक में जायेगा। शिव की पूजा करने वाला शिव लोक में जायेगा। माफ करना, यह मैंने शिव पुराण में पढ़ा था। विष्णु की पूजा करने वाला विष्णुलोक में जायेगा। इसलिए विनती की जाती है कि तू ब्रह्मलोक में जा, शब्दलोक में जा। इसलिए चार वर्ष बाद (चौरखा) किया जाता है। लेकिन लोगों को Scientific ज्ञान नहीं है। संत मत विज्ञान है। संतमत थ्योरी नहीं है। धर्म थ्योरी हो सकता है क्योंकि धर्म में कर्म-काण्ड है। संतमत में कर्मकाण्ड नहीं है। लेकिन संतमत कर्मकाण्ड का खण्डन भी नहीं करता क्योंकि कोई पहली क्लास में पढ़ रहा है, कोई दूसरी क्लास में बढ़ रहा है, कोई दसवीं में पढ़ रहा है किसी ने एम.ए. कर लिया, किसी ने पी.एचडी कर ली। अगर पी.एचडी वाला दसवीं क्लास का खण्डन करे तो उसको पूछो कि तूने दसवीं नहीं पास की? मैं जब भी कबीर साहिब की वाणी या स्वामी महाराज की वाणी लेता हूँ तो उसमें खण्डन है। मैं वो खण्डन नहीं

करता। मैं उनकी वाणी लेता हूँ तो कह देता हूँ यह उनकी वाणी है। जो जहाँ है उसको वहीं से चलना है। न जाने मैं दसवीं क्लास में पिछले जन्म में कितनी बार फेल हुआ, न जाने कितने कर्म काण्ड किए। गुरु की दया हुई तो गुरु के चरण मिले।

जब दया गुरु की हुई, चरणों की भक्ति मिल गई।

दाता कहते हैं अरे, किससे पूछूँ कृष्णा बहन अब कहाँ है? कोई वहाँ टेलीफोन नहीं कर सकता। वो खुद जाने कि वो कहाँ है अगर वह स्वप्न में न हुई तो मेरा दावा है कि वो अपने-आप में गुम हो गई- **जब आये हाथ न था कुछ भी, जब गये तो हाथ नहीं कुछ था।**

कितनी सच्चाई है हम कुछ भी नहीं लेकर आए। जो यहां बना यहीं छोड़ना पड़ेगा। शरीर भी यहीं माँ के गर्भ में बना। यहीं छोड़ना पड़ेगा। जो धन, दौलत प्रापर्टी और बच्चे भी यहीं बने, पत्नी भी यहीं मिली, पति भी यहीं मिला, कोठियाँ धन दौलत सब यहीं मिला। क्या हम इसे साथ में ले जायेंगे, नहीं लेकर जायेंगे। दुनिया से जब चलेगा, कुछ भी न साथ होगा। क्या होगा? सिर्फ दो गज कफन का टुकड़ा मेरा निवास होगा। यही दातादयाल जी महाराज कह रहे हैं। वह दो गज का कपड़ा-

झीनी-झीनी चदरिया, झीनी-झीनी चदरिया।

यह चादर बहुत बारिक है, इसको मालिक ने बहुत प्रेम से बनाया है। इसको दाग नहीं लगने देना है। यह कुदरत ने बनायी है।

झीनी-झीनी, बीनी चदरिया,
झीनी-झीनी, बीनी चदरिया।

उस चदरिया का महत्त्व क्या है वही बताने जा रहा हूँ-

झीनी-झीनी बीनी चदरिया,
झीने रे झीनी
काहे कै ताना काहे कै भरनी,
कौने तार से बीनी चदरिया।
झीनी रे झीनी

चादर में एक तार लम्बी है, एक सीधी है। एक ताना है, एक पाना है। कबीर साहिब कपड़ा बुनते थे तो उन्होंने अपना ही समाधान दे दिया। कौन सी धागे से यह बीनी है फिर वह बताते हैं कि कौन सा ताना-बाना है-

काहे कै ताना, काहे कै भरनी कौने तार से बीनी, चदरिया
इंगला-पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी, चदरिया
झीनी झीनी बीनी चदरिया।

इंगला-पिंगला तथा सुषमना ये इसका ताना-बाना है। वह इंगला-पिंगला क्या है। नाक का दायाँ भाग इँगला तथा पिंगला बायाँ भाग है। यह मस्तक सुषमना है जो हमारे मूलाधार से आती है। यही है ताना-बाना। यह आँखें गंगा और जमुना हैं। दाता दयाल जी महाराज ने अपने सद्‌गुरु राय सालिगराम जी से सवाल किया। मेरे सद्‌गुरु बताओ जिन्दगी क्या है? वे कहते हैं- शिवव्रत लाल, आँखें खोलो मेरी तरफ देखो। उन्होंने मुँह खोला। मुँह बन्द कर लिया। जिन्दगी है लब खुले और बन्द हुए यह राज़े जिन्दगानी है। लब खुले तो जिन्दा हैं, बन्द हुए तो जिन्दगी नहीं है। लब खुले और बन्द हुए यह राज़े जिन्दगानी है।

गुरुनानक देव जी महाराज के साथ बाला तथा मरदाना जी रहते थे। गुरु अपने शिष्यों से बहुत प्यार करते हैं और उनसे बहुत प्यारी-प्यारी बातें करता है।

जाके गुरु के पास बैठो और वचन उनके सुनो।

जो सुनो उनको विचारो, जो विचारो वह गुनो।

सुनो, विचारो और अपने में उतारो।

गुरु नानक देव जी कहते हैं आपको कितने साल हो गए हमसे जुड़े हुए। वे बोले महाराज जी, आपकी दया है। अच्छा! बाबा जी यह बताओ तुम्हारे पास कितने साँस हैं। तुम मरने से पहले कितने साँस ले सकते हो? महाराज जी आपके श्री चरणों में रहते हैं, इसलिए कम से कम दस साँस तो मैं ले ही लूँगा। वे बोले अच्छा! मरदाना तेरा क्या ख्याल है? तू मरने से पहले कितने साँस लेगा? मरदाना बोले, बाला तो मुझसे बड़ा है वह दस साँस ले सकता होगा। मैं तो ज्यादा से ज्यादा पाँच साँस ले सकता हूँ। अब वे दोनों सोचते हैं कि गुरु जी ने हमसे तो पूछ लिया हम भी गुरु जी से पूछें। वे गुरु जी हैं, वे सौ साँस तो ले सकते होंगे। वे दोनों बोले महाराज जी, हमारी भी विनती सुन लो, बताईए आप कितने साँस ले सकते हैं। भई, सुनो मेरे बस में तो कोई साँस नहीं है। मैं तो शायद एक साँस भी न ले सकूँ। पता नहीं साँस वापिस आना कि नहीं आना। तुम लोग धन्य हो। यह सुनकर उन दोनों ने महाराज जी के पाँव पकड़ लिए। हमसे गलती हो गई।

जो गया लौट नहीं आयेगा। साँस जो गई वह लौटकर नहीं आएगी। इसलिए कबीर साहिब की वाणी में बताया गया है कि तुम्हारा

चोला क्या है, तुम्हारा शरीर क्या है। कबीर साहिब का एक शब्द है-

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, तेरे दया धर्म नहीं मन में।

तू अपना मुँह संवारता फिरता है लेकिन तेरे अन्दर में दया धर्म तो है ही नहीं। फिर तू क्या देखता है, तू अपना साया देख रहा है।

आठ कँवल दल चरख डोलै, पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया।

झीनी-झीनी रे झीनी।

आपने चरखा देखा है? उसमें सूत बनता है। यह जीवन भी चरखा है। जो ख्यालों का सूत काटता है। यह आठ गुणों का चरखा है, पाँच तत्त्व है और तीन गुण हैं। पाँच तत्त्व- पृथ्वी, जल, अग्नि वायु और आकाश है। पृथ्वी तत्त्व हमारे मूलाधार में रहता है। जल तत्त्व हमारी इन्द्री में रहता है, अग्नि तत्त्व हमारी नाभि में रहता है, वायु तत्त्व हमारे हृदय में रहता है और आकाश तत्त्व जहाँ से हम बोलते हैं, वहाँ रहता है। संतों ने एक बात और कह दी कि मूलाधार में गणेश रहता है। इन्द्री में ब्रह्मा रहता है, नाभि में विष्णु भगवान रहता है, हृदय में शिव भगवान रहता है और शक्ति हमारे गले में रहती है। 33 करोड़ देवता तुम्हारे शरीर में है, उनकी कद्र करो। पाँच तत्त्व हैं और तीन गुण हैं- रजो गुण, सतो गुण और तमोगुण। रजो गुण उनमें होता है जो दुनिया में बहुत तरक्की करते हैं तमो गुणी वे होते हैं, जो मिल गया खा लिया चलो आराम करते हैं। वे सुस्त होते हैं। सतो गुणी वे होते हैं जो परमात्मा का नाम लेते हैं कि न जाने कब परमात्मा की चिट्ठी आ जाये। वे धर्म-कर्म की बात करते हैं। वे किसी सन्त-साधु के पास जाते हैं, किसी महापुरुष के साथ प्रेम करते हैं और अपने जीवन को सुधार लेते हैं। इसलिए कहते हैं चरखा

है–

साईं को सियत मास दस लागे।

ठोक ठोक के बीनी चदरिया।

हमारा असली जन्म दस महीने के बाद होता है। लड़के दस महीने में पैदा होते हैं और लड़कियाँ नौवें महीने में पैदा हो जाती हैं। जिन माताओं की खुराक ठीक नहीं होती है, उनके बच्चे आठवें महीने में हो जाते हैं। पूर्ण जीवन दस महीने में बना है। कबीर साहिब कहते हैं दस महीने इस चादर को बनाने में लगे और ठोक ठोक के बनायी यानि इसमें कोई कमी नहीं छोड़ी। पूरे पाँच तत्त्व इसमें भर दिए, पूरे तीन गुण भी इसमें भर दिए। यह मन भी इसमें रख दिया, चित्त भी इसमें रख दिया, बुद्धि भी इसमें रख दी। अहंकार भी इसमें रख दिया। पाँच कर्मेन्द्रियाँ दे दीं, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दे दीं। इसको चौदह कला सम्पूर्ण बना दिया। हमें सोलह कला नहीं बनाया। सोलह कला सन्त बनता है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तुम्हारे पास हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ तुम्हारे पास हैं। चार– मन, बुद्ध, चित्त, अहंकार आप सब में हैं चौदह कला तुम सब हो। लेकिन दो चीजें आप में नहीं होती हैं। वह हैं– प्रकाश और शब्द। जिसमें प्रकाश और शब्द आ गया वह सोलह कला सम्पूर्ण हो गया। वह वापिस अपने घर जायेगा, दूसरे शायद नहीं जा पायेंगे।

सोचो! दस महीने लग गए इसको आने में और जाने में एक पल भी नहीं रहेगा। इसकी महत्ता क्या हुई? इसकी महत्ता तभी है जब सद्गुरु इसमें बैठ गया–

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी।

ओढ़ि के मैली कीन्ही चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी।

ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया॥

झीनी रे झीनी

कबीर साहिब कहते हैं देवताओं ने भी यह चोले पहने, ऋषि, मुनियों ने भी चोले पहने लेकिन पहन कर इसको मैली कर दिया। मैं ज्ञानी हूँ, कौन ज्ञानी है क्या ये शरीर ज्ञानी है। मैं सन्त हूँ यह भी अपने-आप में बेड़ा गर्क कर दिया। मैं गुरु हूँ, अरे काहे का गुरु भई। अपने-आपका ज्ञान वापिस किया। कुछ पता है कहाँ जाना है?

मैं बॉस हूँ, मैं ठेकेदार हूँ। मेरी इतनी धन-दौलत है। किसी चीज को अपना समझना, बस समझो कि दाग लग गया। सब कुछ तो उसका है–

तन भी तेरा धन भी तेरा मन भी तेरा

मेरे परमदयाल फकीर।

सब उसका है, उसी ने ही दिया है फिर मेरा कैसे हो सकता है। जो बाप की आज्ञा का पालन करता है, बाप के इशारे पर चलता है, बाप के नियमों पर चलता है। बाप उसको अपनी जायदाद अपने-आप ही दे देता है। जो बच्चा बाप का कहना ही नहीं मानता, बाप की आज्ञा का पालन नहीं करता, बाप की सेवा नहीं करता वह उनकी जायदाद का हकदार नहीं बनता। इसलिए उससे अपनी दोस्ती कर लो, उससे अपना प्यार कर लो, उस मालिक के साथ जुड़ जाओ। तम्हारी जिन्दगी में कोई कमी नहीं रहेगी। कबीर साहिब कहते हैं मैंने तो अपने चोले को बचा

लिया। जब कबीर साहिब ने चोला छोड़ा तो हिन्दू कहते हैं यह हमारा गुरु है और मुसलमान कहते हैं यह हमारा गुरु है। झगड़ा करने लगे। उनके शरीर पर चादर डाली हुई है। गुरुनानक साहिब की भी ऐसी ही कहानी है। कुछ बोले अरे, पहले देख तो लो कबीर साहिब हैं भी कि नहीं। जब चादर उठा कर देखा तो वहाँ फूल पड़े हुए थे।

तुम वहीं से आए हो जहाँ से मैं आया हूँ। इसलिए मैं आपसे बात करने का हक रखता हूँ। मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कृष्णा बहन तुम अपने घर लौट जाओ, मुसाफिर तुम अपने घर लौट जाओ। जाने वाले मुसाफिर से पूछो तू कहाँ जा रहा है।

मुसाफिर कुछ भी बताता ही नहीं है। हम प्रार्थना तो कर सकते हैं कि अपने घर जाओ बहना, आपने बहुत लायक बच्चों को जन्म दिया, अपने प्यारे पति की बहुत सेवा की। मरते दम तक उनका साथ दिया। आपने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। जब कर्त्तव्य ही पूरा कर दिया तो अपने घर जाओ। इतना कहते हुए मैं आज के सत्संग का विराम करता हूँ। मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज आपके अन्दर नेक ख्याल पैदा कर दें। अपना आपा आप पहचानों यह ख्याल पैदा कर दें। कहा और का नेक न मानो। अपने-आप को जानो कि तुम कौन हो, यह भावना मेरे दाता आपके भीतर पैदा कर दें यही आज मैं आप सबको शुभ भावना देता हूँ।

-राधास्वामी

ooooo

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab National Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code- PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानियों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,

फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

हज़ूर दयाल कमल जी महाराज की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मानवता मन्दिर, होशियारपुर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव दिनांक 27.7.2018 दिन शुक्रवार को हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस महोत्सव में देश के कोने-कोने से मानवता धर्म के अनुयायी पधार रहे हैं, जो अपने अनुभवों से उपस्थित जनसमूह को कृतार्थ करेंगे।

जनरल सैक्रेटरी, 9463115977

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है

-सचिव

List No.1

S.No.	DONOR	Amount
1.	S.R. Gulwade & Satsangees, Mumbai	163000/-
2.	Navdeep Maan, Australia	25100/-
3.	Late Sh. Nand Sihra's Family, Canada	13100/-
4.	Jajgit Awasthi, USA	11000/-
5.	Dayal Singh, USA	11000/-
6.	Shobha Jaswante, Amravati	10000/-
7.	Bhupen Kothari, Mumbai	10000/-
8.	Prakash Punjabi, Dubai	10000/-
9.	Chander Kailash, Hissar	11100/-
10.	Ram Chander Saneja, Sirsa	10000/-
11.	Janeshwar Dayal, Nabha	10000/-
12.	Ach. Tajendra Mani Gupta, Bhilwara	10000/-
13.	Sanjeev Joshi S/o Sh. P.D. Joshi, Canada	10000/-
14.	Sub. Des Raj, Hoshiarpur	10000/-
15.	Subhash/Sudha, Hyderabad	6000/-
16.	Padam Nath Tiwari	5001/-
17.	V. Markendya, Hanamkonda	5000/-
18.	Harish K. Shah, Mumbai	5000/-
19.	Vikas H. Shah, Mumbai	5000/-
20.	S.K. Sethi, Jalandhar	5000/-
21.	Balraj, Hoshairpur	5000/-
22.	Radhe Shah, USA	5000/-
23.	Manosa Gulwade, Mumbai	5000/-
24.	Baby Asthaa Ashish, Mumbai	5000/-
25.	Prasant Gulwade, Mumbai	5000/-
26.	Shaleja Ashish, Mumbai	5000/-
27.	V.K. Menon, Mumbai	5000/-
28.	Sai Kripa Hospital, Mumbai	5000/-
29.	Lajpat Rai Dhingra, Faridbad	5000/-
30.	Sukhdev Singh, Budhawar	4000/-
31.	Kirpal Dogra, Chandigarh	3100/-
32.	Dia Joy Modi, Mumbai	3100/-
33.	Jitenteder Modi, Mumbai	3100/-
34.	Sucha Singh, Batala	3000/-
35.	Manjit Bansotra, New Delhi	2500/-
36.	Ashok Dhingra, Alwar	2100/-
37.	Anju Sharma, Mumbai	2100/-
38.	Brij Mohan Miraj, Mumbai	2100/-
39.	Onima/Satish Mudliar, Mumbai	2000/-
40.	Harinder Singh, Bhoma	2000/-
41.	Ashwani Sagar, USA	1500/-
42.	Surjit Kaur/Surjit Singh, Hyderabad	2000/-
43.	Gurmeet Singh, Adampur Doaba	1234/-
44.	Mastr Sham Lal, Hoshiarpur	1111/-
45.	Jawahar Singh, Adampur Doaba	1100/-
46.	Smt. Yamuna, Hoshiarpur	1100/-
47.	Varinder, Ambala	1100/-
48.	Nanak Chand	1100/-
49.	Manoj Kumar Khurana	1100/-
50.	G.S. Bhatnagar, Patiala	1100/-
51.	Hemant Sharma, Hoshiarpur	1100/-
52.	Abhishek Rai	1100/-
53.	RK Bhardwaj, Ludhiana	1100/-
54.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	1100/-
55.	Dr. Shagun, Tanda	1100/-
56.	Anand Praash Singh, Adampur Doaba	1100/-
57.	Hribaan Jay Modi, Mumbai	1100/-
58.	Vedant Jay Modi, Mumbai	1100/-
59.	Rajan Kumar, Ludhiana	1100/-

60.	Gurbachan Singh, Kanpur	1100/-
61.	Madan Lal/Bhagwan Dass, Hyderabad	1100/-
62.	Harish, Vijayawada	1100/-
63.	Nand Singh, Harchowal	1000/-
64.	Paramjit Singh, Harchowal	1000/-
65.	Sudershan Khope, Amravati	1000/-
66.	Sagar Khedgur, Amravati	1000/-
67.	Gaurav P. Sawant, Mumbai	1000/-
68.	Mukesh Himmat Ramka, Mumbai	1000/-
69.	Labh Singh/Surinder Kaur, Ludhiana	1000/-
70.	Ashok K. Aggarwal, Amritsar	1000/-
71.	Sushma, New Delhi	1000/-
72.	Chetan Shriram, Jaysinghpure, Bellary	1000/-
73.	Raj Dulari Rajdan, Jammu	1000/-
74.	Jaya Kaharaloo, Jammu	1000/-
75.	Prem Paul, Adampur Doaba	1000/-
76.	Babu Ram Thakur, Sosan, HP	1000/-
77.	Manish Bhatia, Hoshiarpur	700/-
78.	Ramesh, Hyderabad	500/-
79.	Pradeep Kumar, Hyderabad	500/-
80.	Ravinder Rao, Kazipet	500/-
81.	D.V. Ramakrishna, Medak	500/-
82.	Shiv Pal Singh, Nanded	500/-
83.	D.N. Srivastava, Allahabad	500/-
84.	Pradeep Kumar Yadav, Allahabad	500/-
85.	Shiv Murti, Varanasi	500/-
86.	Daljit Singh, Adampur Doaba	500/-
87.	Karan Thakur, Mubarakpur	500/-
88.	Savita Agnihotri, Chandigarh	500/-
89.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	500/-
90.	Subhash Chander, Hoshiarpur	500/-
91.	Smt. Ladhar, Jalandhar	500/-
92.	Praveen Kulshreshtha, Agra	501/-
93.	Hardyal Singh	500/-
94.	Naveen Kulshreshtha, Agra	500/-

95.	Swaran Lal Bagga, Hoshiarpur	500/-
96.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	500/-
97.	KGP Pathak, Etawah	500/-
98.	Kalu Ram Upadhyay, Muzaffarnagar	500/-

List No.2

S.No.	DONOR	Amount
1.	H.H. Dayal Kamal Ji Maharaj	6000/-
2.	Bansi Dhar Sharma, Lushiana	125100/-
3.	Naresh & Co. Hyderabad	51000/-
4.	Harbhajan Singh, USA	15414/-
5.	Prem Lata Gupta, New Delhi	15000/-
6.	Prem Paul/Varinder Jeed, Adampur Doaba	15050/-
7.	Gaurav Gas Service, Hoshiarpur	15000/-
8.	Shivalik Service Station, Nangal Badha	12000/-
9.	Rajesh Kishore	11111/-
10.	Padam Sharma, New Delhi	11000/-
11.	Rajinder Singh, USA	11000/-
12.	Dr. Gurmit Singh/Sarabjit Kaur, Tanda	11000/-
13.	Murti Ram Poonia, Hissar	10100/-
14.	Deepak Gas Service), Santokhgarh	10000/-
15.	Phoolwati, Saberwal	10000/-
16.	Jagwanti Devi, Dharamshala	10000/-
17.	Dr. Amit Chawla, U.K	7000/-
18.	Manav Sewa Samiti, Aligarh	6610/-
19.	Anjana Sharma, USA	6500/-
20.	Parminder Singh, Hoshiarpur	6000/-
21.	Shakuntla Devi, Hoshiarpur	5101/-
22.	Ved Prakash Sharma	5100/-
23.	Harmit Singh Andy, Australia	5100/-
24.	Gayatri Pharmacy, Modinagar	5100/-
25.	Murti Devi, Meerut	5100/-

26.	Ach. Chhote Lal Ji, New Delhi	5100/-
27.	Vivek Bishnoi, Australia	5000/-
28.	Amar Singh, Jhawan	5000/-
29.	Loveleen Kaur, Hoshiarpur	5000/-
30.	Nand Kishore, Ujjain	5000/-
31.	Tula Ram	5000/-
32.	Dr. P.L. Sharma, Shimla	5000/-
33.	In memory of Late Sub. Maj. Karam Singh, Passi kandi	4500/-
34.	Alka Tyagi, New Delhi	4500/-
35.	Ram Niwas Tanwar, Mohindergarh	3100/-
36.	B.S. Sharma (Retd. H/M), Kangra	4000/-
37.	Ach. Manoj Tyagi Ji, Saharanpur	2200/-
38.	Advocate G.S. Raghav, Hoshiarpur	2200/-
39.	Shrawan, Delhi	2100/-
40.	Anil Sharma, Mumbai	2100/-
41.	Th. Kishan Singh, Hanamkonda	2100/-
42.	Satpal Goyal, Zeera	2100/-
43.	Ashish Sood, Thural (HP)	3000/-
44.	Vijay Sharma	3100/-
45.	Ravinder Garg, Noida	2100/-
46.	Sham Singh Rana	2100/-
47.	R.K. Bhardwaj, Ludhiana	2100/-
48.	Yog Raj Sharma, Chandigarh	2100/-
49.	Pushpa Sharma, Chandigarh	2100/-
50.	Bhanwar Kanwar, Samer	2100/-
51.	Bahadur Sharma, Ram Prasth	2100/-
52.	Gopal Krishan, Moradabad	2100/-
53.	Avtar Singh, Hoshiarpur	2100/-
54.	R.K. Sharma, Chandigarh	2100/-
55.	Rameshwar Prasad, Batala	2100/-
56.	Laxmi Narayan, Hoshiarpur	2100/-
57.	Ashok Khetrapal, Ambala	2100/-
58.	Tripta Sharma, Hoshiarpur	2100/-
59.	Param Dayal Steel Industries, Hoshiarpur	2100/-
60.	Amar Chand, Kangra	2000/-

61.	Nand Singh, Batala	2000/-
62.	Gaurav Sharma, Canada	2000/-
63.	Rajiv Joshi, Hoshiarpur	2000/-
64.	Lt. Col. R.D. Thakur, Gagret	2000/-
65.	Sajjan Singh, Jodhpur	2000/-
66.	Th. Narayan Singh. Hanamkonda	2000/-
67.	Satpal Devgan, Amritsar	1600/-
68.	Ankita Saini, Mahilpur	1500/-
69.	Prem Lata, Shimla	1100/-
70.	Amin Lal, Sheikhupur	1100/-
71.	Divya Jyoti, Una	1100/-
72.	Ashok Kumar, Hoshiarpur	1100/-
73.	Brahm Singh Poswal, Meerut	1100/-
74.	Luxmi, Delhi	1100/-
75.	Amit, New Delhi	1100/-
76.	Anju Satish, Noida	1100/-
77.	Rakesh Sharma, Delhi	1101/-
78.	Bhuvnesh Sharma, Inderprasth	1100/-
79.	Manu, Delhi	1100/-
80.	Harvarinder Singh, Ludhiana	1100/-
81.	Dr. Dilbagh Singh, Hoshiarpur	1100/-
82.	In memory of Kamalpurwali Mai Ji	1100/-
83.	Paramdeep Singh, Gagret	1100/-
84.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	1100/-
85.	Ram Karan, Sheikhupur	1100/-
86.	Kalu Ram, Sheikhupur	1100/-
87.	Joginder Kumar, Patihar	1100/-
88.	Sumitra Swami, Hissar	1100/-
89.	Ach. Zile Singh Ji, Charkhi Dadri	1100/-
90.	Satish Sharma, Hoshiarpur	1100/-
91.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	1100/-
92.	Raj Rani Kapoor, Faridabad	1100/-
93.	Kailash Chander, Ujjain	1100/-
94.	Surajit Singh, Fatehabad	1100/-
95.	Ashok Kumar, Fatehabad	1100/-

96. Kapil, Adampur (Haryana) 1100/-
97. Surinder Singh, Chandigarh 1100/-
98. Yashwinder Singh Rana, Dasuya 1100/-
99. Tej Ram, Hoshiarpur 1100/-
100. Sarabjit Singh, Mirzapur 1000/-
101. Kamla Luthra, Hoshiarpur 1000/-
102. Vikramaditya, Sabherwal 1000/-
103. Babu Ram Thakur, Sosan HP 1000/-
104. Chet Ram Bhardwaj, Solan 1000/-
105. Raghuwar Dayal & Sons, Amritsar 1000/-
106. R.S. Pathania, Nagrota Bagwan 1000/-
107. Amar Singh Rathore, Bikaner 1000/-
108. Surinder Jaswal, Una 1000/-
109. Jaipal, Akhtiarpur 1000/-
110. Prakash Chand, Delhi 1000/-
111. Bharti Saneja, Sirsa 1000/-
112. Sarwan Kumar Shukla, Gagret 1000/-
113. Prince, Rohtak 1000/-
114. Vineet Kumar Maurya, Allahabad 1000/-
115. Faqir Chand, Hoshiarpur 1000/-
116. Ashok Kumar, Aligarh 920/-
117. Pappu, Sabherwal 700/-
118. Ishwar, Pathihar 700/-
119. Mahipal, Modinagar 510/-
120. Vinod Kumar, Modinagar 500/-
121. Budh Prakash, Modinagar 501/-
123. Balbir Singh, Moga 500/-
124. Sital Kaur, Hoshiarpur 500/-
125. Madan Pal, Muzaffarnagar 500/-
126. Krishan Swaroop, Ghaziabad 500/-
127. Anjana Kayastha, Nangal 500/-
128. Bakshish Singh, Hoshiarpur 500/-
129. Golu Ram, Sheikhupur 500/-
130. Mange Ram, Sabherwal 500/-
131. Om Parkash, Hissar 500/-

132. Prem Dass Sharma, Hamirpur 500/-
133. Swaroop Chand, Ambala Cantt. 500/-
134. Ach. Sehjanand Ji, Ballia 500/-
135. Ranjit Kumar, Ludhiana 500/-
136. Suksham, Hoshiarpur 501/-
137. Gaurav Bedi, Saharanpur 500/-
138. Ach. L.K. Rao Ji, Charkhi 500/-
139. T.L. Verma, Kharar 750/-
140. Kamal Sharma 500/-
141. Khazan Singh, Ludhiana 500/-
142. Madan Mohan, Adampur 500/-
143. Subhash Sharma, Pathankot 500/-
144. R.K. Anand, Tanda 500/-
145. Vinod K. Sharma, Jalandhar 500/-
146. Joginder Pal, Adampur 500/-
147. Sub. Maj. Hira Singh, Panipat 500/-
148. Dev Narayan, Ujjain 500/-
149. Karamnya, Nadaun 850/-
150. Mahesh Kumari Shukla, Gagret 500/-
151. S.R. Sharma, Hoshiarpur 500/-
152. Roshan Lal, Mahilpur 500/-
153. Th. Ranjit Singh, Warangal 500/-
154. Neelam Sharma, Hoshiarpur 500/-
155. Late Sh. Shanti Swaroop, Hoshiarpur 500/-
156. Neeraj Pathak, Jalandhar 500/-
157. Satish Khanna, Hoshiarpur 505/-
158. Bimla Devi, Hoshiarpur 501/-
159. Shiv Murti Yadav, Varanasi 500/-
160. Subhash C. Manocha, Gurgaon 500/-
161. Keshava Prasad Lal 500/-
162. Pankaj Sharma 500/-
163. Arun, Una 500/-